RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

# माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com


**सुविचार**

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी


वर्ष-06, अंक - 35 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 23 मई 2024 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए


# यूपीए के मुकाबले मोदी सरकार में आखिर किस क्षेत्र में पिछड़ा देश

**नई दिल्ली, एजेंसी।**

केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार इस बार 10 वर्षों के कार्यकाल यानी एनडीए-1 और एनडीए-2 में अपने प्रदर्शन के आधार पर वोट मांग रही है। उससे पहले 10 वर्षों तक केंद्र में मनमोहन सिंह की अगुवाई वाली यूपीए-1 और यूपीए-2 की सरकार थी। इन दोनों सरकारों के कार्यकालों में देश कहां था और कहां पहुंचा, इसे दोनों ही के दो-दो कार्यकालों के 10 प्रमुख पैरामीटर्स के तुलनात्मक अध्ययन से समझा जा सकता हैं।

### जीडीपी विकास दर

मनमोहन सिंह सरकार के पहले कार्यकाल यानी यूपीए-1 में जीडीपी विकास दर का सालाना औसत 6.9: था। वहीं यूपीए-2 के दौरान गिरकर 6.7: तक पहुंच गया।

2014 में नरेंद्र मोदी की सरकार आने के बाद एनडीए-1 की सरकार में जीडीपी विकास दर का सालाना 7.4: के औसत से दर्ज हुआ। लेकिन, एनडीए-2 की सरकार में यह 7.0: ही रहा। हालांकि, यह वह अवधि है, जब दुनिया कोविड महामारी की चपेट में रही और भारत ने दुनिया की तमाम विकसित अर्थ व्यवस्थाओं से भी अच्छा प्रदर्शन करके दिखाया।

### प्रति व्यक्ति आय (हजार रुपए में/ औसतन)

यूपीए-1 में 56.5 हजार रुपए
यूपीए-2 में 72 हजार रुपए
एनडीए-1 में 94.4 हजार रुपए
एनडीए-2 में 1 लाख 14.6 हजार रुपए

### बेरोजगारी दर (औसतन)

यूपीए-1 में 5.6:
यूपीए-2 में 5.5:
एनडीए-1 में 5.6:
एनडीए-2 में 4.3: (कोविड महामारी काल शामिल)

### मुद्रास्फीति/ महंगाई (औसतन)

यूपीए-1 में 7.7:
यूपीए-2 में 9.0:
एनडीए-1 में 4.2:
एनडीए-2 में 5.7:

### राजकोशीय घाटा (जीडीपी का प्रतिशत-औसतन)

यूपीए-1 में 4:
यूपीए-2 में 5.4:
एनडीए-1 में 3.7:
एनडीए-2 में 5.9:(कोविड महामारी काल शामिल)

### फूड सब्सिडी (अरब रुपए)

यूपीए-1 में 1,480 अरब रुपए
यूपीए-2 में 3,721 अरब रुपए
एनडीए-1 में 5,689 अरब रुपए
एनडीए-2 में 14,241 अरब रुपए

### फर्टिलाइजर सब्सिडी (अरब रुपए)

यूपीए-1 में 1,697 अरब रुपए
यूपीए-2 में 3,265 अरब रुपए
एनडीए-1 में 3,469 अरब रुपए
एनडीए-2 में 8,030 अरब रुपए

### रेल मार्ग की लंबाई

यूपीए-1 में 64,015 किलोमीटर
यूपीए-2 में 65,808 किलोमीटर
एनडीए-1 में 67,415 किलोमीटर
एनडीए-2 में 68,907 किलोमीटर से अधिक

### राष्ट्रीय राजमार्ग की लंबाई

यूपीए-1 में 70,458 किलोमीटर
यूपीए-2 में 91,287 किलोमीटर
एनडीए-1 में 1,32,499 किलोमीटर
एनडीए-2 में 1,48,000 किलोमीटर से ज्यादा

### एक अमेरिकी डॉलर की तुलना में रुपए का मूल्य (औसतन)

यूपीए-1 में 44.1 रुपए
यूपीए-2 में 51.2 रुपए
एनडीए-1 में 65.6 रुपए
एनडीए-2 में 77.1 रुपए

### अन्य इंडिकेटरों के मुताबिक भी मोदी सरकार का प्रदर्शन बेहतर

इसके अलावा तमाम पैरामीटर ऐसे हैं, जिनमें मनमोहन सिंह सरकार के 10 वर्ष के शासनकाल की तुलना में मोदी सरकार के 10 वर्षों का प्रदर्शन कहीं ज्यादा बेहतर नजर आ रहा है। मसलन, घरेलू एलपीजी कनेक्शन मनमोहन सरकार के दूसरे कार्यकाल तक महज 16.625 करोड़ था तो यह मोदी सरकार के मौजूदा कार्यकाल में बढ़कर 31.4 करोड़ हो चुका है। इसी तरह घरेलू बिजली कनेक्शन मनमोहन सरकार के दूसरे कार्यकाल तक 17.07 करोड़ था तो मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल तक बढ़कर 26.69 करोड़ हो चुका है।

यूपीए-2 की सरकार के दौरान कर राजस्व 32,139 अरब रुपए था, जो मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में 90,097 अरब रुपए हो चुका है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश या एफडीआई यूपीए-2 तक 151.6 अरब डॉलर था, जो कि इस सरकार के मौजूदा कार्यकाल में 24.42 अरब डॉलर पहुंच चुका है।

# चुनाव आयोग की नसीहत : सेना पर सियासी टिप्पणी से बचे

**नई दिल्ली, एजेंसी।**

चुनाव आयोग ने जाति, समुदाय, भाषा और धर्म के आधार पर प्रचार करने के लिए भाजपा और कांग्रेस दोनों पर कड़ी कार्रवाई की है। इस मामले में दोनों ही पार्टियों को सलाह दी गई है कि वे ऐसे करने से बचें। एक तरफ चुनाव आयोग ने कांग्रेस के स्टार प्रचारकों से रक्षा बलों का राजनीतिकरण न करने की सलाह दी है तो वहीं भाजपा को ऐसे भाषण न देने की सलाह दी है जिससे समाज में विभाजन पैदा हो।

इस मामले में चुनाव आयोग ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को स्टार प्रचारकों को उनके भाषण को सही करने, सावधानी बरतने और शिष्टाचार बनाए रखने के लिए फॉर्मल नोट जारी करने का निर्देश दिया है। चुनाव आयोग ने कहा कि भाजपा और कांग्रेस के स्टार प्रचारकों के चुनाव प्रचार की गुणवत्ता में बेहद गिरावट आई है जिसके मद्देनजर यह आदेश जारी किए गए है।

### धार्मिक और सांप्रदायिक रंगत से दूर रहें

चुनाव आयोग ने दोनों पार्टियों के स्टार प्रचारकों को निर्देश दिया है कि वे अपने प्रचार में धार्मिक और सांप्रदायिक रंगत से दूर रहें। चुनाव आयोग ने भाजपा से यह भी कहा है कि वह प्रचार के दौरान ऐसे भाषण न दे जिससे समाज में विभाजन पैदा हो।

### सुरक्षा-बलों का राजनीतिकरण न करें

वहीं, चुनाव आयोग ने कांग्रेस को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि स्टार प्रचारक ऐसे बयान न दें जो गलत धारणाएं देते हों। इसके अलावा, अग्निवीर योजना पर बोलते समय, चुनाव निकाय ने कांग्रेस प्रचारकों या उम्मीदवारों से रक्षा बलों का राजनीतिकरण न करने और रक्षा बलों की सामाजिक-आर्थिक संरचना के बारे में संभावित विभाजनकारी बयान न देने के लिए कहा है।

### चुनाव प्रचार के दौरान न करें ये काम

चुनाव आयोग ने कहा है कि भाजपा और कांग्रेस को भारतीय मतदाताओं के गुणवत्तापूर्ण चुनावी अनुभव की विरासत को कमजोर करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। चुनाव आयोग ने भाजपा और कांग्रेस द्वारा एक दूसरे के खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों को खारिज कर दिया है। आयोग ने कहा है कि सत्ताधारी पार्टी को चुनाव के समय अतिरिक्त जिम्मेदारी मिलनी चाहिए और विपक्ष के लिए भी असीमित अतिरिक्त जगह नहीं होनी चाहिए।

## फरार अक्षय कांति बम: सूचना देने पर मिलेगा इनाम

**इंदौर।** इंदौर लोकसभा क्षेत्र के कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में ऐन मौके पर पर्चा वापस लेकर भाजपा में शामिल होने वाले स्थानीय कारोबारी अक्षय कांति बम के खिलाफ प्रमुख विपक्षी दल ने शहर में अलग-अलग जगह पोस्टर लगाए हैं। इन पोस्टर में बम को हत्या के कथित प्रयास के 17 साल पुराने मामले में 'फरार' बताया गया है और उनकी सूचना देने वाले व्यक्ति को 51 सौ रुपए का नकद इनाम देने की घोषणा की गई है।

इस मामले में एक सत्र न्यायालय ने बम और उनके 75 वर्षीय पिता कांतिलाल के खिलाफ 10 मई को गिरफ्तारी वारंट जारी किया था। खजराना पुलिस थाने के प्रभारी सुजीत श्रीवास्तव ने बुधवार को बताया कि, दोनों आरोपियों की तलाश जारी है। कांग्रेस की शहर इकाई के कार्यवाहक अध्यक्ष देवेंद्र सिंह यादव ने कहा, कांग्रेस के साथ गद्दारी करने वाले बम हत्या के प्रयास के मामले में फरार हैं। उनकी गिरफ्तारी में पुलिस का सहयोग करने के लिए हमने शहर के प्रमुख चौराहों, तिपहिया वाहनों और चार पहिया वाहनों पर पोस्टर लगाए हैं।

उन्होंने कहा कि, अगर कोई कांग्रेस कार्यकर्ता या आम नागरिक बम के बारे में पुलिस को सूचना देगा, तो उसे उनके द्वारा 5 हजार 100 रुपए का नकद इनाम दिया जाएगा। हत्या के कथित प्रयास के मामले में बम और उनके पिता की अग्रिम जमानत याचिका पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर पीठ में 24 मई (शुक्रवार) को सुनवाई होनी है। शहर के एक प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट (जेएमएफसी) ने जमीन विवाद को लेकर स्थानीय किसान यूनुस पटेल पर 2007 में कथित हमले के संबंध में बम और उनके पिता के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी में भारतीय दंड विधान की धारा 307 (हत्या का प्रयास) जोड़े जाने का 24 अप्रैल को आदेश दिया था। इस आदेश के महज पांच दिन 29 अप्रैल को बम ने इंदौर के कांग्रेस उम्मीदवार के तौर पर अपना नाम वापस लेने का कदम उठाया था। वह इसके तुरंत बाद भाजपा में शामिल हो गए थे।

# सूचना के अधिकार से मिले दस्तावेजों ने खोली मेघनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भ्रष्टाचार की पोल

**भ्रष्टाचार का गढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र: मेघनगर,झाबुआ के मुद्रण घोटाले की तर्ज पर अधिकारी,कर्मचारी, सप्लाय और माफिया मिलकर लूट रहे हैं जनता का पैसा**

माही की गूंज,मेघनगर। इमरान शेख

आदिवासी बाहुल क्षेत्र में केंद्र सरकार हो या राज्य सरकार स्वास्थ सेवाओं की बेहतरी के लिए करोड़ों का बजट आवंटित करती है। लेकिन सरकारी औहदो पर बैठे अधिकारी उनके निचले स्तर के कर्मचारी और माफिया सब मिलकर किस तरह स्वास्थ सेवाओं में सुधारों,सुविधाओं और बेहतर क्रियान्वन के लिए आए जनता के खून-पसीने की कमाई से दिए टैक्स के पैसों को फर्जी कागजी खाना-पूर्ति कर लूट लेते हैं इसका पता हमको तब चला जब सूचना के अधिकार से मिले दस्तावेजों को हमारे माही की गूंज के स्थानिय संवाददाता ने पढ़ा। जिसमें रोगी कल्याण समित हो या राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन सब में मिले सरकारी फंड में लाखों का भ्रष्टाचार किया गया। भ्रष्टाचार के इस खेल के तार सिर्फ यही तक सीमित नहीं दिखते, कही ना नही जिला स्तर से भी जुड़े नजर आते हैं। क्यू की वाहनों के टेंडरों से सबंधित जानकारियां जो जिले से जुड़ी थी उन्हें देने के लिए मूल आवेदन सूचना के अधिकार की धारा 5 के तहत मेघनगर से जिले में रेफर किया गया था। पर वहां बैठने वाले सूचना के अधिकार के प्रभारी दुर्गेश जोशी लगातार जानकारी तैयार है का झुठ बोल-बोलकर प्रतिनिधि को लगातार झाबुआ बुलाते रहे। मगर हर बार जानकारी पर हस्ताक्षर नही हुए का बहाना बनाकर जानकारी उपलब्ध नही करवाई गई। सिर्फ पीडीएफ से कुछ जानकारियां उपलब्ध करवाई गई, जानकारी आज दिनाक तक भी नही दी गई है। जिससे मामला पुरा संदेह के घेरे में ही आता है। कई चीजें संदिग्ध है जिस से ही इस बात की भी जांच की जानी चाहिए की आखिर दुर्गेश जोशी सहित कितने कर्मचारी,अधिकारी वर्षो से एक ही जगह पर जिला अस्पताल सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों या प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर पदस्थ है। जिस से इनके हौसले इतने बुलंद है की ये कानूनों का भी पालन नही करते हैं और उनका मखौल उड़ाते हैं। इन्ही की तर्ज पर मेघनगर ब्लॉक अकाउंट मैनेजर ने भी सूचना के अधिकार के अंतर्गत भुगतान की शीट,अधूरे बिल,जिन फाइलों के आधार पर भुगतान हुआ वो नही दिए और तो और बिना लोग बुक के ब्लॉक अकाउंट मैनेजर ने नियम विरुद्ध गाड़ियों का भुगतान भी कर दिया। क्यों की ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर का कहना था कि लोग बुक ही गुम हो गई है और हमको दिए दास्तवेजों में भुगतान शीट के साथ लोग बुक की फोटो कॉपी भी अटैच नही थी जो इन लोगो द्वारा किए गए वाहनों की माप पुस्तिकाओं के भ्रष्टाचार को छुपाने के लिए आज तक भी पूरी नही दी गई। तो बीना लोग बुक के ये कैसे तय हुआ कि गाडियां कितने किलोमीटर चली। कुल मिलाकर बिना शासन के नियमो का पालन किए चाहे बिना रोगी कल्याण समिति के प्रस्ताव के बिना क्रय करना हो, भुगतान के नियम हो ,बिना टेंडर बुलाए खिरीदी हो, फर्जी कोटेशन के दस्तावेजों से,फर्जी बिलों,फर्जी गाड़ियों की लोग बुक इंट्रियों से जनता का पैसा इन अधिकारियोंख् कर्मचारियों, विभिन्न सामग्री विक्रय फर्म संचालकों ,गाड़ी मालिको से सांठगांठ कर भ्रष्टाचार कर लूट लिया गया.. ! लूट के इस खेल में पूर्व से लेकर वर्तमान ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर,ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर ,ब्लॉक अकाउंट मैनेजर, अकाउंटेंट प्रभारी रोगी कल्याण समिति, सदस्य रोगी कल्याण समिति सहित अधिकारियों कर्मचारियों, फर्मों के मालिको, दुकानदारों सबने मिलकर भ्रष्टाचार में गजब की कागजी खानापूर्ति का कमाल दिखाया। मगर वो कहते हैं की अपराध करने वाला कितना ही शातिर क्यो ना हो, कहीं कोई गलती कर ही देता है। ऐसी ही कई गलतियां इन लोगों ने भी कर दी। सूचना के अधिकार के अंतर्गत हमको दिए गए लगभग 4000 दस्तावेजों में आधे दस्तावेजों के अध्ययन में ही भ्रष्टाचार की कई परतें खुल गई जिसमें बिना टेंडर बुलाए लाखों की खरीदी स्वास्थ्य मेले में कर के अपने चहेते रिदम ग्राफिक्स को फर्जी कोटेशन से लाभ पहुंचाया गया और उनको अनुचित भुगतान भी किया गया। रिदम ग्राफिक्स को लाभ पहुंचाने के लिए फर्जी दस्तावेज बना डाले। ये सारा घोटाला झाबुआ के चर्चित मुद्रण घोटाले की तरह ही किया गया जिसमें तत्कालीन कलेक्टर सहित कई को जेल जाना पड़ा था। इस घोटाले से संबंधित दस्तावेज जब हमने मुख्य चिकत्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी झाबुआ को कुछ माह पूर्व दिखाए तो उनके द्वारा बजाए इन अधिकारियों कर्मचारियों को तत्काल स्थानांतरित कर जांच टीम गठित कर कारवाई करने की बजाए लिखित शिकायत करने हेतु कहा गया। उसके बाद फिर हमने अभी दो दिन पूर्व भी उनके संज्ञान में मामला पुनः डाला और उन्हें बताया कि, किस तरह फर्मों को अनुचित लाभ पहुंचाकर भ्रष्टाचार किया जा रहा है तो कहीं खुद के परिवारों के सदस्यों को ही अनुचित भुगतान कर दिया गया है जो कॉन्फ्लिक्ट ऑफ़ इंट्रेस्ट के अंतर्गत आता है। बावजूद इसके सीएमएचओ द्वारा इस खुले भ्रष्टाचार को नज़रंदाज़ किया गया और अब तक कोई कार्रवाई नही की गई है। जिस से जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की भूमिका भी इस भ्रष्टाचार के खेल में संदिग्ध नजर आ रही है। इस से अंदाजा लगाया जा सकता है की किस कदर नीचे से ऊपर तक कुएं में भांग मिली हुई है। तथा वरिष्ठ अधिकारी मय प्रमाण के भ्रष्टाचार संज्ञान में आने के बाद भी बजाए कारवाई करने के बड़े अजीब तर्क देते है। कोई बिना प्रमाणों के शिकायत करे तो कहते हैं प्रमाण लाओ, प्रमाण दिखा दे तो कहते हैं लिखित में शिकायत करो। कोई प्रमाणों के साथ लिखित शिकायत करे तो बिना शिकायतकर्ता को बुलाए उसका पक्ष सुने एक पक्षीय भ्रष्टाचारियों के पक्ष में शिकायतों को नस्तीबद्ध कर देते है। जब की इस प्रकारण में हमारे पास भ्रष्टाचार के इतने सारे पुख्ता दस्तावेजिक प्रमाण है की जो ना सिर्फ प्रथम दृष्टया सीधा-सीधा भ्रष्टाचार दिखाते हैं। बल्कि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम और भारतीय दंड विधान की कई संगीन धाराओं में अधिकारियों, कर्मचारियों, फर्मों के मालिको, दुकानदारों और कई अन्य कई लोगो पर अपराधिक प्रकरण दर्ज किया जाने हेतु पर्याप्त प्रमाण है। अब देखना यह है की भ्रष्टाचार के जिम्मदारों द्वारा इन सभी के विरुद्ध क्या ठोस करवाई होती है ।

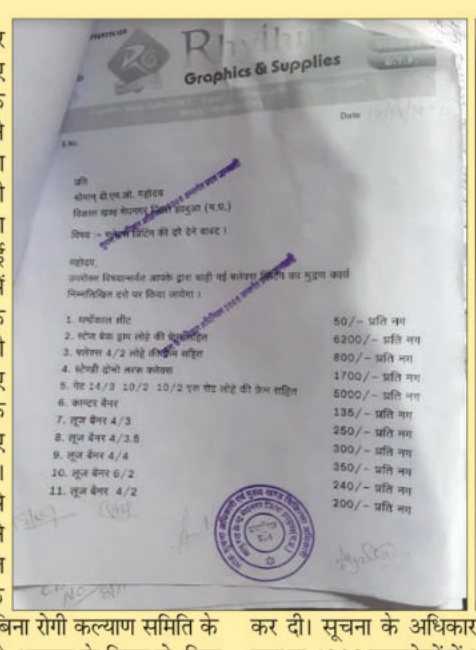


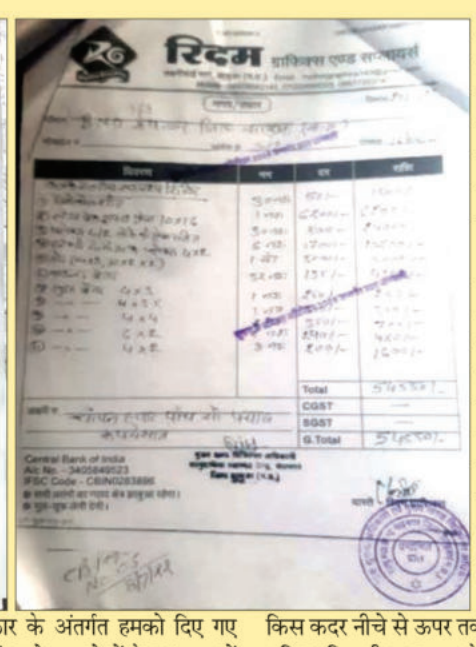


### ऑडिटर की भूमिका भी संदिग्ध

ऑडिटर ने भी ब्लॉक अकाउंट मैनेजर की बिना बिल नंबर के लिखी केश बुक, बिना लोग बुक के वाहनों की किए गए भुगतान, बिना वाहनों के नंबर डले बिलो को किए गए भुगतान, सफल स्वीकृत कोटेशन वाले फर्म की लिस्ट के अन्य फर्मों के लेटर पैड पर कोटेशन उपलब्ध नही होने के बाद भी भुगतान किए जाने पर कोई आपत्ती दर्ज नही की। साथ ही कई संदिग्ध भुगतान और दस्तावेजों को भी नजरंदाज कर विभाग को ऑडिट में क्लीन चिट दे दी। जो की साफ ऑडिटर की स्वास्थ्य विभाग के साथ सांठगांठ को दर्शाता है।

### कलेक्टर को करनी चाहिए ठोस कार्रवाई

मेघनगर सामुदायिक स्वाथ्य केंद्र पर हुए इस भ्रष्टाचार पर जिले में पदस्थ हुई नई कलेक्टर नेहा मीना को चाहिए की वो सबसे पहले इस भ्रष्टाचार में लिप्त सभी अधिकारियों जिनमे ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर,ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर,ब्लॉक अकाउंट मैनेजर सहित जिमेदार सभी कर्मचारियों को उनके वर्तमान स्थान से हटाकर नवीन स्थान पर पदस्थ करे। जिस से की ये जांच को किसी भी प्रकार से प्रभावित न कर सके और भ्रष्टाचार पर लगाम लग सके।.साथ ही साथ मध्यप्रदेश सरकार की भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति के पालन में एक निष्पक्ष जांच दल जिसमें स्वास्थ्य विभाग का कोई अधिकारी शामिल ना हो का गठन कर सब जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध ठोस कार्रवाई करनी चाहिए। जिस से जिले को ये संदेश मिले की जनता के पैसों में भ्रष्टाचार किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नही किया जाएगा चाहे वो कोई भी क्यू ना हो।

# बहादुर सागर तालाब यानि नगरपालिका की दुधारू गाय...?

## तालाब सौंदर्यीकरण को लेकर पहले भी हो चुके है करोड़ों के भ्रष्टाचार

## क्या एक बार फिर से गढ़ी जाएगी भ्रष्टाचार की नई इबारत...?

माही की गूंज, झाबुआ।

शहर के तालाबों की दुर्दशा को सुधारने के लिए नगरपालिका की दो परिषदें खप गई और तीसरी भी अपने कार्यकाल का लगभग आधा समय पूरा करने को है। समय की बात करें तो लगभग एक दशक गुजरने को है मगर शहर के तालाबों की स्थिति बद से बदतर होती नजर आ रही है। जिस तरह के भ्रष्टाचार तालाब सौंदर्यीकरण के नाम पर नगरपालिका में हुए है वे किसी से छुपे नहीं है। भ्रष्टाचार को लेकर जांचे हुई, दोषियों के नाम भी उजागर हुए, लेकिन इनमें से अब तक कोई भी सलाखों के पीछे नहीं है। एक कलेक्टर, दो नगपालिका अध्यक्ष, दो सीएमओ सहित 10 लोगों पर आरोप तय हुए थे, लेकिन उसके बाद क्या कार्रवाई हुई किसी को कुछ पता नहीं। करोड़ों के भ्रष्टाचार के बाद एक बार फिर वर्तमान नगरपालिका परिषद ने नई योजना व नए टेंडरों के साथ इसका जिम्मा उठा रखा है। मगर सफलता अब भी कोसो दूर दिखाई दे रही है। अगर वर्तमान परिषद इसमें नाकाम होती है तो यह कहना गलत नहीं होगा कि बहादुर सागर तालाब यानि नगरपालिका की दुधारू गाय...। चूंकि पिछली दो परिषदों ने तालाब सौंदर्यीकरण के नाम पर खुलकर मलाई चाटी और चटवाई है। इसलिए शंका तो पैदा होती ही है कि, वर्तमान परिषद इसमें मलाई नहीं चाटेगी।

2015 से शुरू हुई तालाब सौंदर्यीकरण की यह कहानी लगभग एक दशक पूर्ण होने के बावजूद पूरी होने का नाम ही नहीं ले रही है। 2015 में शहर के दो मुख्य तालाबों के लिए सौंदर्यीकण की योजना सामने आई थी। इस काम के लिए नगरपालिका को करीब 5.29 करोड़ की राशि आवंटित हुई थी। मगर तालाब सौंदर्यीकरण के लिए आवंटित हुई इस राशि पर भ्रष्टाचारियों की लार टपकी और इसी के साथ शुरू हुआ इस राशि को धड़े लगाने का काम। जिन दो तालाबों पर यह राशि खर्च होनी थी उनमें से एक पर इस राशि से कुछ भी खर्च नहीं किया गया। बल्कि एक ही तालाब पर जरूरत से ज्यादा राशि खर्च करना दर्शा कर करोड़ों के भ्रष्टाचार को अंजाम दे दिया गया। शिकायत के बाद इस भ्रष्टाचार की जांच हुई और जांच में कलेक्टर सहित 10 कर्मचारियों पर आरोप भी तय हुए, लेकिन इतना सब होने के बाद न तो आरोपियों पर किसी तरह की कोई कार्रवाई हुई और ना ही उनसे भ्रष्टाचार की गई रकम की वसूली।

अब एक बार फिर वर्तमान परिषद ने अमृत सरोवर योजना 2 के तहत 1 करोड़ 12 लाख में बहादुर सागर तालाब के सौंदर्यीकरण का ठेका दिया है। ठेकेदार को फरवरी से लेकर मई तक यह कार्य पूरा करना था, लेकिन जमीनी हकीकत तो यही बता रही है कि यह काम इस बार तो पूरा होने से रहा। क्योंकि कुछ ही दिनों में मानसून अपनी दस्तक दे देगा और तालाब में पानी भर जाएगा। ठेकेदार काम बंद कर देगा और नगरपालिका इसे अगले साल पर ढोलकर पल्ला झाड़ लेगी। इस बार टेंडर होने के काफी समय बाद ठेकेदार ने यहां काम शुरू किया है। जबकि फरवरी माह में ही तालाब का पानी खाली कर दिया गया था। वर्तमान स्थिति में अभी बहुत सा काम बाकी है जो मानसून के पहले पूर्ण होने की स्थिति में तो कतई दिखाई नहीं पड़ता। इससे इस बात का अंदाजा भी लगाया जा सकता है कि, कहीं इस बार भी नगरपालिका में तालाब सौंदर्यीकरण को लेकर कोई बड़ा खेल तो नहीं हो रहा। क्या फिर से नगरपालिका में भ्रष्टाचार की एक नई इबारत गढ़ी जाएगी...? क्योंकि जब से नई परिषद वजूद में आई तब से नगरपालिका में एक ही रोना रोया जा रहा है वह है फंड की कमी का और फंड की कमी से जूझती नगरपालिका में तालाब सौंदर्यीकरण की यह योजना वाकई अमृत योजना बन कर आई हो..? जिसने नगरपालिका में बैठे भ्रष्टाचारियों के कंठ को तर कर दिया हो..? अगर ऐसा है तो यकिन मानिए यह सिद्ध हो जाएगा कि, बहादुर सागर तालाब यानि नगरपालिका की दुधारू गाय। या फिर यह कह लो कि वर्तमान परिषद भी बहती गंगा में हाथ धोकर पवित्र और पाक साफ हो जाएगी।

अगर इस बार बहादुर सागर तालाब का काम पूर्ण नहीं होता है तो यह तय है कि स्थिति ढाक के तीन पात या उससे भी खराब होती दिखाई देगी। नगर की जनता इससे पहले भी बहादुर सागर तालाब के हालात देख चुकी है। जिस जलकुम्भी को तालाब से साफ करने के लिए पिछले वर्ष कई तरह की कवायदें की गई थी, वह मिथक ही साबित हुई थी और पूरा का पूरा तालाब फिर से जलकुम्भी से पट गया था। अबकी बार भी अगर तालाब का कार्य पूरा नहीं हुआ और मानसून ने धावा बोला तो यह तय है कि, एक बार फिर जलकुम्भी इस तालाब को अपने कब्जे में ले लेगी। और आने वाले वर्षों में फिर नगरपालिका परिषद इसे साफ और सुंदर बनाने के लिए नई कहानी नए टेंडर और नए ठेकेदार के साथ शुरू करेगी। इस तरह तालाब सौंदर्यीकरण के नाम पर यह कहानी हर साल लिखी जाती रहेगी और नगरपालिका में बैठे भामाशाह और अधिकारी, कर्मचारी भ्रष्टाचार की गंगा में डूबकियां लगाते रहेंगे।

एक कहावत है कि, जिन लोगों ने अपने पूर्वजों की धरोहरों को संभाल कर नहीं रखा उनका सर्वनाश निश्चित तौर पर हुआ है। सन् 1766 में राजा बहादुरसिंह ने 68 बीघा में यह तालाब बनवाया था। उस समय इस तालाब को लेकर उनके उद्देश्य बहुत ही बड़े रहे होंगे। भू-जल स्तर को बढ़ाने के साथ-साथ आम लोगों की रोज मर्रा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इस तालाब में 13 घांटों का निर्माण किया गया था। करीब ढाई सदी पहले बने इस तालाब के सौंदर्य को निहारते हुए कई पीढ़ीयां गुजर गई। आज से लगभग दो दशक पहले तक इसकी सौंदर्यता लोगों को अपनी ओर आकर्शित कर रही थी, लेकिन उसके बाद धीरे-धीरे करके यह तालाब अतिक्रमण और भ्रष्टाचार की भेंट ही चढ़ता नजर आया है। वर्तमान स्थिति तो बद से बदतर नजर आ रही है। करीब ढाई सदी पुराना यह तालाब अब अपने अंदर अपार गंदगी को समेटे हुए है। जिस तालाब का पानी किसी समय पीने योग्य माना जाता था अब उस पानी में नई पीढ़ी हाथ डालने से भी गुरेज करती नजर आती है। अतिक्रमणकारियों ने इसे 68 बीघा से 63 बीघा कर डाला है। मगर जिम्मेदार मौन है और लगातार तालाब सौंदर्यीकरण के नाम पर बह रही भ्रष्टाचार की गंगा में डूबकियां लगा रहे है।

# शादी के पहले जो महिला पुरुष को समर्पित करती है वह भी होती है बड़ी गुनेहगार

## आपसी सहमति से बने शारीरिक संबंध में पुरूष ही क्यों गुनेहगार...?

माही की गूंज, झाबुआ।

शादी एक पवित्र बंधन है और शादी के पूर्व जो भी महिला व पुरुष शारीरिक संबंध बनाते हैं उसे हमारा समाज अवैध ही कहता है और उसे महापाप भी कहा जाता है। शायद पाप को ही पुण्य कहा जाने लगा है इसलिए इसे कलयुग कहा जाता है, इसलिए इस कलयुगी व्यवस्था में पाप व पूण्य की परिभाषा बदल दी है। हमारी कानूनी व्यवस्था भी कुछ ऐसी है कि, कलयुग में किये जा रहे पाप में एक पक्षीय कार्रवाई के साथ सामाजिक गुनेहगार बन रही है। हम कतापी यह नहीं कहते हैं कि, एक गुनेहगार को उसकी सजा नहीं देना चाहिए लेकिन जो गुनाह दो इंसान मिलकर रजामन्दी के साथ करते हैं उसमें सजा सिर्फ एक को ही क्यों मिलती है...? यह एक यक्ष प्रश्न है।

कई मामले ऐसे आते हैं जिसमें यह सामने आता है कि, एक महिला व पुरुष के मध्य आपसी सहमति के साथ बिना शादी के ही संबंध बनाए जाते हैं और जब दोनों में कुछ टकराव सा हो जाता है या स्वार्थ के भाव उत्पन्न हो जाते हैं तो ऐसे में वह महिला थाने में जाती है और रिपोर्ट दर्ज करा दी जाती है कि, पुरुष ने शादी का झांसा देकर उसके साथ लंबे समय तक शारीरिक संबंध बनाएं (बलात्कार किया) और शादी करने से मना करने पर रिपोर्ट दर्ज करवाने का हवाला महिला देती है।

हम ऐसे मामलों में पुरूष को भी किसी भी स्थिति में सही नहीं कहते परंतु जब शादी करने की बात एक पुरुष व महिला के मध्य होती है और महिला अपने पूरे अस्तित्व को एक पुरुष के हवाले कर देती है यह कहां तक नीति संगत है...?

जब बात शादी की होती है तो शादी एक पवित्र बंधन के साथ एक पवित्र रिश्ता बनता है और वह महिला भी गुनेहगार मानी जाती है जो शादी के पूर्व ऐसी स्थिति में अपने अस्तित्व को पुरूष के हवाले कर देती है। एक ऐसा ही मामला झाबुआ के विवेकानंद कॉलोनी के निवासी एक जिम संचालक पर दर्ज हुए मामले के बाद सामने आया है। एक महिला ने थाने पर जाकर एक जिम संचालक पर आरोप लगाया कि, जिम संचालक ने शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध कई बार बनाएं और बाद में उसने शादी करने से इनकार कर दिया तथा जान से मारने की धमकी देने लगा।

उक्त मामला सोमवार को दर्ज हुआ। वही बताया जा रहा है कि, युवती ने रिपोर्ट दर्ज करवाने के पूर्व में अपनी कलाई पर ब्लेड या चाकू से अपनी कलाई काट आत्महत्या का भी प्रयास किया था। तय है ऐसा हुआ है तो आत्महत्या करना भी अपराध है लेकिन इस तरह की आत्महत्या करने जैसी स्थिति प्रेम प्रसंग के चलते अधिकांश सामने आती है। और यह माना जा सकता है कि जिम संचालक एवं युवती के मध्य प्रेम प्रसंग था और दोनों की आपसी सहमति के साथ ही आपसी शारीरिक संबंध बने होगें। प्रत्येक घटना व अपराध का स्वरूप अलग रहता है यह सही है। पर पुलिस को ऐसे मामले में एक पक्षीय कार्रवाई न कर दोनों की आपसी सहमति को देख कानूनी कार्रवाई करना चाहिए।

# नरसिंह प्रकटोत्सव : अभिषेक एवं महाआरती सम्पन्न

**माही की गूंज, थांदला।**

भगवान विष्णु के चौथे अवतार नरसिंह भगवान का जन्मोत्सव नगर मे धूमधाम से मनाया। भक्त मलूकदास द्वारा स्थापित प्राचीन नरसिंह ऋशभदेव मन्दिर पर नरसिंह चुर्तुदशी के अवसर पर मंगलवार को भगवान नरसिंह का प्रकट उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर नगर की प्रथम नागरिक लक्ष्मी सुनिल पण्दा द्वारा मुख्य यजमान के रूप में भगवान का अभिषेक पं. चेतन आचार्य के आचार्यत्व में करते हूए शीघ्र निर विघ्न मन्दिर निर्माण कार्य पूर्ण होने की कामना की गई ।

संध्या में भगवान की प्रकट उत्सव आरती सम्पन्न हुई। इस अवसर पर भगवान को विषेश रूप से पंजेरी, पंचामृत एवं केसरिया भात का भोग लगया आकर्षक श्रृंगार के साथ आरती पश्चात महिला मण्डल व्दारा हनुमान चालिसा एवं भजन का गायन किया गया ।

इस अवसर पर भागवताचार्य प. किशोर आचार्य, श्रीरंग अरोरा, शान तिलाल वर्मा, नृसिंह भक्त मण्डल के संयोजक अशोक अरोरा,सचिन सोनी, भेरूलाल वैध ''उस्ताद'', सुधीर शर्मा , मनोज उपाध्याय, एडवोकेट श्रीमंत अरोरा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जिला सहकार्यवाह भूषण भटट, हिन्दू जागरण मंच के जिला संयोजक कमलेश वर्मा, धर्मेन्द्र भगोरा, शांतु बारिया ,डॉ सागर मित्रा, पंकज चोरडिया सहीत बडी संख्या में सनातन धर्मावलम्बि उपस्थित थे । महाआरती पश्चात नवनिर्माणाधीन भगवान नृसिंह ऋशभदेव मन्दिर का श्रृद्धा पूर्व अवलोकन श्रृद्धालुओं व्दारा किया गया ।

# 21वां जश्ने उर्स की तैयारियां शुरू

**माही की गूंज, पेटलावद।**

*हजरत ओढ़ी वाले दातार के उर्स को अब मात्र 15 दिन शेष रह गए है। पंपावती नदी के पावन तट के किनारे स्थित दातार की दरगाह न केवल मुस्लिम समुदाय बल्कि अन्य धर्म के लोगो के लिए भी आस्था का केंद्र है। यहां होने वाले उर्स में सीमावर्ती राज्य गुजरात व राजस्थान से भी जायरीन आते है। उर्स के मद्देनजर सर्व समाज उर्स कमेटी ने दरगाह परिसर में रंगाई-पुताई का कार्य शुरू किया है।*

उर्स कमेटी के सदर अमजद लाला ने बताया, कमेटी के सदस्यों द्वारा 21वें उर्स के लिए तैयारियां जोर-शोर से की जा रही है। दरगाह पर आकर्षक रोशनी की जाएगी। जायरिनों के लिए पानी की व्यवस्था अलग से रहेगी। उर्स में साउंड, टेंट व्यवस्था , लाइट डेकोरेशन, वीडियोग्राफी आदि व्यवस्थाओ की तैयारीया शुरू कर दी है। सर्व उर्स कमेटी ने उर्स में अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने का आह्वान किया है।

गोरतलब है कि उर्स में तीन दिनों तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। रात में कव्वाली की महफिल सजेगी। इसमें उत्तरप्रदेश के मशहूर कव्वाल हजरत की शान में कलाम पेश करेंगे।

### ऐसे आयोजित होगा पूरा कार्यक्रम

6 जूनः सुबह 8 बजे आस्ताने औलिया पर कुरआन ख्वानी होगी। शाम को असर की नमाज के बाद पुलिस वाले बाबा के आस्ताने से चादर शरीफ का जुलूस निकलेगा। जुलूस हुसैनी चोक से शुरू होकर सीधे पंपावती नदी किनारे आस्ताने औलिया पर पहुंचेगा। जहां चादर पेश की जाएगी। रात 8 बजे बाद दरगाह में तकरीर का आयोजन होगा। जिसमें सैय्यद अजहर अली बापू साहब तकरीर करेंगे।

7 जूनः रात 8 बजे बाद शुरू होने वाले महफिले सिमां कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध कव्वाल जावेद हुसैन खान (रामपुर, यूपी) आयेंगे। 8 जूनः सुबह 9 बजे महफिले रंग का आयोजन होगा। जिसमें जावरा के मशहूर कव्वाल यूसुफ फारुख दाता की शान में कलाम पेश करेंगे। इसके बाद कुल की फातेहा होगी। दोपहर में लंगर (विशाल शुद्ध शाकाहारी भंडारे) का आयोजन किया जाएगा।

# कृषि संबंधित विभागों की समीक्षा बैठक का हुआ आयोजन

**माही की गूंज, अलीराजपुर।**

कलेक्टर डॉ. अभय अरविंद बेडेकर की अध्यक्षता में कलेक्टर कक्ष में कृषि विभाग, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, उद्यानिकी विभाग एवं सहकारिता विभाग के कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस दौरान कलेक्टर डॉ. बेडेकर ने कृषि विभाग के अधिकारियों से सॉइल हेल्थ कार्ड, खाद्य सुरक्षा अधिनियम, नैनो यूरिया प्रयोग आदि कार्यो की समीक्षा की।

कलेक्टर डॉ. बेडेकर ने पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अधिकारियों से पशु सहायक, पशु उपचार एवं पशु टीकाकरण के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी ली। इसी के साथ किसान क्रेडिट कार्ड के अंतर्गत ऋण की व्यवस्था पोल्ट्री फार्म बनाए जाने के लिए दिए जाने वाले ऋण तथा गौ संवर्धन के लिए बनाई जा रही गौ शालाओं, पशु बीमा आदि कार्यो की समीक्षा की।

उद्यानिकी विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होने सब्जी क्षेत्र आम क्षेत्र मसाला क्षेत्र एवं पुष्प क्षेत्र आदि के रकबे में हो रही प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान सहकारिता विभाग द्वारा खरीफ रबी फसल ऋण वितरण एवं खाद्य वितरण के लिए किए जा रहे कार्यो की समीक्षा की। इस दौरान कैलाश चौहान, दिलीप सोलंकी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

# शिव महापुराण कथा का पंच कुंडी यज्ञ के साथ हुआ समापन

**माही की गूंज, सारंगी।**

खेड़ापति हनुमान जी मंदिर पर संगीत मय शिव महापुराण कथा का वाचन राजोद (बदनावर) से पधारे पंडित श्री मयंक श्यामसुंदर शर्मा के द्वारा संगीत मय शिव महापुराण का वाचन कर श्रोताओं को सुनाया गया। प्रतिदिन कथा में पंडित जी द्वारा विस्तार पूर्वक शिव महापुराण कथा का महत्व बताया गया। इन सात दिनों में शिव महापुराण कथा में बारह ज्योतिर्लिंग, शिव पार्वती विवाह, रिद्धि-सिद्धि के दाता गणेश जी के साथ 64 कोटि देवी-देवताओं का वर्णन सुनाया गया। पंडित जी ने बताया, सत्संग में जाकर कथा सुनकर पुण्य लाभ लेना चाहिए। शिव महापुराण कथा पूर्ण होने पर पंच कुंडी यज्ञ में शिव भक्तों ने आहुतियां देकर धर्म लाभ लिया। इन सात दिनों में शिव भक्तों ने कथा पंडाल में पहुंचकर कथा सुनकर धर्म लाभ लिया। प्रतिदिन प्रसादी का वितरण अलग-अलग शिव भक्त द्वारा लाभ लिया गया।

नगर पत्रकार संघ ने व्यास पीठ पर विराजे पंडित जी का एवं शिव महापुराण कथा का पूजन किया। साथ ही नगर पत्रकार संघ के सभी सदस्यों ने पंडित जी को माला पहनाकर अभिनंदन पत्र एवं साल-श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। संगीत मंडली के सभी सदस्यों का भी दुपट्टा पहना कर सम्मान किया। इस अवसर पर संजय उपाध्याय, जीवन राठौड, जयराज भट्ट, अमित पाटीदार, धर्मेंद्र प्रजापत ने गुरुदेव का आशीर्वाद लिया। मुख्य जजमान गेंदालाल मालवीय एवं आयोजक समिति ने सभी शिव भक्तों का आभार माना।

# रिश्वत लेने वाले पटवारी को चार वर्ष की कैद

**माही की गूंज, रतलाम।**

न्यायालय ने रिश्वत लेने के मामले में दोषी पाए जाने पर पटवारी विजय मुनिया पुत्र शोक मुनिया निवासी ग्राम नायन (रावटी) को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 7 के तहत चार वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। उस पर दो हजार रुपये का जुर्माना भी किया गया। फैसला मंगलवार को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के विशेष न्यायाधीश आदित्य रावत ने सुनाया।

### दो बीघा कृषि भूमि जमीन की पावती के लिए मांगी रिश्वत

जिला अभियोजन अधिकारी गोविंद प्रसाद घाटिया ने बताया कि फरियादी नेपालसिंह पुत्र नरवरसिंह निवासी ग्राम अरवलिया भामा (आलोट) ने एक जुलाई 2020 को अपने मित्र कालूराम पुत्र काशीराम शर्मा निवासी ग्राम बर्डिया राठौर के माध्यम से लोकायुक्त कार्यालय उज्जैन जाकर लोकायुक्त एसपी को लिखित शिकायत आवेदन दिया था कि आलोट तहसील के ग्राम अरविलया भामा में उनकी दो बीघा कृषि भूमि पौने स्थित है। उसकी पावती गुम हो गई है। उक्त भूमि की नई वापती बनवाने के लिए गांव के हल्का नंबर नौ के पटवारी विजय मुनिया से मिला था उन्होंने नई पावती बनवाने के लिए दो हजार रुपये की रिश्वत मांगी थी।

### रिश्वत संबंधी बातचीत रिकार्ड दिया

शिकायत पर तत्कालीन लोकायुक्त डीएसपी वेदांत शर्मा ने रिश्वत मांगने की पुष्टि के लिए फरियादी नेपालसिंह के मित्र कालूराम शर्मा को रिश्वत संबंधी बातचीत रिकार्ड करने के लिए शासकीय वाइस डिजिटल रिकार्डर दिया था।इसके बाद कालूराम शर्मा ने रिकार्डर नेपालसिंह को दिया था और नेपालसिंह से पटवारी की बातचीत रिकार्ड की गई थी। इसके बाद रिश्वत की मांग प्रणामित होने पर लोकायुक्त पुलिस ने पटवारी विजय मुनिया को रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ने की योजना बनाई थी।

### ऐसे पकड़ा गया पटवारी

योजना के तहत उज्जैन से लोकायुक्त का दल छह जुलाई 2020 को आलोट पहुंचा था। आलोट की हाउसिंग बोर्ड कालोनी के सामने स्थित अभिषेक लोहार की फोटोकापी की दुकान पर पहुंचकर पटवारी विजय मुनिया ने वहां उपस्थित नेपालसिंह से रिश्वत के दो हजार रुपये लिए थे। तभी इशारा मिलते ही दल के सदस्यों ने पटवारी विजय मुनिया को रंगे हाथ पकड़ लिया था।

पटवारी विजय मुनिया ने फरियादी नेपालसिंह से दो हजार रुपये लेकर अपनी शर्ट की जेब में रख लिए थे। दल के सदस्यों ने पटवारी की जेब से रयासन लगे पांच-पांच सौ रुपये के चार नोट जब्त किए थे। इसके बाद पटवारी के हाथों को सोडियम कार्बोनेट पाउडर के घोल में धुलवाया गया था तो उसके हाथ गुलाबी हो गए थे।

विवेचना के बाद लोकायुक्त ने पटवारी के खिलाफ 28 नवंबर 2022 को विशेष न्यायालय में चालान पेश किया था। प्रकरण में शासन की तरफ से पैरवी विशेष लोक अभियोजक कृष्णकांत चौहान ने की। चौहान ने बताया कि सुनवाई के दौरान फरियादी नेपालसिंह पक्षद्रोही हो गया था। न्यायालय ने वैज्ञानिक व अन्य साक्ष्यों के आधार पर आरोज प्रमाणित पाए जाने पर पटवारी को सजा सुनाई।

# खुले में मांस विक्रय की कार्रवाई को लेकर चर्चाओं में नगरपालिका का अमला

## अधिकारियो की नियत मे कही कोई खोट तो नही... ?

माही की गूंज, झाबुआ।

प्रदेश में नई सरकार के वजूद में आते ही मुख्यमंत्री यादव ने खुले में बिक रहे मांसाहार की दुकानों को प्रतिबंधित करने के आदेश जारी कर दिए थे। बाद में इसमें कुछ संशोधन हुए । जिसमें मांसाहार की दुकानों को व्यवस्थित रूप से एक तरफ या आड़ में संचालित करने के आदेश दिए गए इसमें भी कई तरह की शर्तें लागू की गई। मगर मुख्यमंत्री के यह आदेश अब भ्रष्टाचार और खुली लूट की दुकान बनते दिखाई दे रही है।

पिछले दिनों जिला मुख्यालय पर एक ऐसा मामला देखने को मिला जिसने नगरपालिका की कार्रवाई पर कई तरह के सवाल खड़े कर दिए और भ्रष्टाचार की शंका की सुई नगरपालिका अधिकारियों की ओर घुमा कर रख दी है। हुआ कुछ ऐसा कि, पिछले सप्ताह नगरपालिका सीएमओ पूरे अपने लाव-लश्कर के साथ शहर में खुले में लग रही मांस (मटन) की दुकानों पर कार्रवाई करने निकले थे। वे इस क्रम की शुरूआत करने के लिए सीधे वार्ड क्रमांक 4 में स्थित एक मटन की दुकान पर जा धमके। जबकि नगरपालिका परिसर के बाहर ही खुले में मटन की कई दुकानें संचालित हो रही है। बावजूद इसके सीएमओ साहब सीधे वार्ड क्रमांक 4 स्थित मटन की दुकान पर पहुंचे। यहां पहुंचने के बाद सीएमओ साहब ने दुकान का लायसेंस और जरूरी कागजात की डिमांड कर डाली। हालांकि दुकान मालिक ने पुराना लायसेंस साहब को बताया। इस पर साहब व उनके लवाजमे ने दुकान पर जैसे धावा ही बोल दिया। दुकान मालिक और नगरपालिका अमले के बीच बहस हो गई और नौबत हाथापाई की आ गई। इस पूरे मामले में नगरपालिका सीएमओ ने थाने पहुंचकर अपना आवेदन दिया। वही दुकान मालिक ने भी नगरपालिका अमले के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई।

इस पूरे घटनाक्रम को अगर गौर से देखा जाए तो कई सवाल ऐसे है जिनके जवाब ढूंढने मुश्किल हो रहे है।

पहला सवाल तो यह कि, आखिर ऐसी क्या वजह थी जो नगरपालिका सीएमओ नगरपालिका के समीप खुले में लग रही मटन दुकानों को छोड़कर सीधे वार्ड क्रमांक 4 की मटन दुकान पर कार्रवाई के लिए जा धमके। अगर किसी तरह की कोई शिकायत थी तो वे नोटिस जारी कर मांस विक्रेता को सूचना या वार्निंग दे सकते थे। उसके बाद भी अगर कोई सुधार नहीं होता तब कार्रवाई करना उचित था।

दूसरा सवाल यह कि, अगर वाकई नगरपालिका सीएमओ की यह रूटीन कार्रवाई थी तो फिर वार्ड क्रमांक 4 में ही लग रही दूसरी दुकान पर नगरपालिका का अमला क्यों नहीं पहुंचा...? जबकि दोनों ही दुकानों की दूरी महज कुछ मीटर की ही है।

तीसरा सवाल यह कि, नगरपालिका परिसर के समीप लगने वाली मटन दुकानें पूरी तरह से सड़क पर लग रही है और जिस वार्ड क्रमांक 4 की दुकान पर सीएमओ साहब कार्रवाई करने पहुंचे थे वह दुकान बकायदा दुकान मालिक के निजी भवन में थी और पूरी तरह से आड़ करके यहां मांस का विक्रय किया जा रहा था। तो फिर ऐसी क्या मजबूरी थी जो साहब को वार्ड क्रमांक 4 की खुली दुकानो को छोड़ इस मटन दुकान पर खींचकर ले आई।

चौथा सवाल यह कि, जब नगरपालिका के समीप ही वार्ड क्रमांक 7 में तमाम तरह की मांस विक्रय की दुकानें संचालित है, जिसमें बकरे, मुर्गे और पाड़े का मास भी विक्रय होता है, क्या इन दुकानों के लायसेंस सही है...? चूंकि जहां तक हमारी जानकारी है प्रदेश में नई सरकार बनने के बाद झाबुआ में मांग होने के बावजूद किसी तरह का कोई मांस विक्रय का लायसेंस जारी नही किया गया है। जब किसी तरह का कोई मांस विक्रय लायसेंस जारी या रिनिवल नही किया गया है तो फिर शहर में लग रही तमाम मांसाहार की दुकानें तो अवैध ही है। फिर किसी एक मांस विक्रय की दुकान को टारगेट करना सवाल तो खड़े करेगा ही।

पांचवा सवाल यह कि, नगरपालिका की टीम के साथ हमेशा वार्ड क्रमांक 4 की मटन दुकान पर ही विवाद क्यों होता है। पहले भी नगरपालिका अमले का इसी दुकान पर कार्रवाई को लेकर विवाद हुआ था। लगातार एक ही दुकान पर नगरपालिका की कार्रवाई और विवाद यह ईशारा कर रहे है कि, सीएमओ साहब के साथ इस दुकान से शायद कोई सेटलमेंट नहीं हो रहा है। अगर सेटलमेंट हो जाए तो बाकी की मांस दुकानों की तरह यहां भी शायद कार्रवाई नहीं हो।

छठवां सवाल यह कि, आखिर नगरपालिका मांस विक्रेताओं के लिए स्लाटर हाउस की मांग को पूरा क्यों नहीं कर पा रही है। मांस विक्रेताओं की यह मांग जायज भी है। मगर नगरपालिका के अधिकारी शायद ऐसा होने नहीं दे रहे है। क्योंकि अगर मांस विक्रेताओं को स्लाटर हाउस मिल गया तो उनकी उगरानी की दुकानदारी शायद बंद हो जाएगी।

सातवां सवाल यह कि, जिस जगह पुराना स्लाटर हाउस था उस जगह वर्तमान में खुद नगरपालिका परिषद का भवन है और नगरपालिका यहीं से संचालित हो रही है। इसका मतलब यह है कि, आज जो नगर में खुले में या बंद में मटन दुकानें संचालित हो रही है वह नगरपालिका की ही देन है। स्लाटर हाउस की जमीन पर नगरपालिका ने कब्जा किया है और मांस विक्रेताओं को नगर में कहीं भी स्लाटर हाउस बनाकर नहीं दिया है। तो यह स्वाभाविक है कि, वे अपना रोजगार पाने के लिए कहीं भी दुकानें लगाएंगे। क्योंकि नगरपालिका तो उन्हे रोजगार देने से रही।

ऐसे और भी कई सवाल है जो नगरपालिका और मांस विक्रेताओं के बीच चल रही खींचतान पर खड़े हो रहे है। आखिर पिछले कई वर्षों से नगरपालिका मांस विक्रेताओं को स्लाटर हाउस बनाकर क्यों नहीं दे सकी? वर्तमान स्थिति में भी स्लाटर हाउस को लेकर चल रही नपा की कार्रवाई संदेहास्पद ही नजर आ रही है। क्योंकि जो जमीन नगरपालिका, स्लाटर हाउस के लिए मांस विक्रेताओं को देने के लिए बता रही है, वह नगरपालिका की सीमा के बाहर है, जिस पर नगरपालिका का कोई अधिपत्य नहीं है। जब यहां के ग्रामीणों को इसकी भनक लगी तो उन्होने स्लाटर हाउस का विरोध शुरू कर दिया और नगरपालिका की स्थिति ढाक के तीन पात होती नजर आई। अब सवाल फिर से वहीं आकर खड़ा हो गया कि, आखिर मांस विक्रेता जाए तो जाए कहां? नगरपालिका मांस विक्रेताओं की मजबूरी को समझे और इनकी समस्याओं का गंभीरता से निराकरण करे। वरना यही समझा जाएगा कि कहीं नगरपालिका और उसमें बैठे अधिकारियों के मन में कही कोई खोट तो नहीं...?

# 20 दिन मे एक बार आ रहा नलों मे पानी, ग्रामीणों को गर्मी में हो रही परेशानी

### ग्राम पंचायत नहीं कर पा रही जलआपूर्ति

माही की गूंज, खवासा/भामल।

ग्राम पंचायत भामल में इन दिनों ग्रामीणों को पानी की समस्या से गर्मी में दो-चार होना पड़ रहा है लेकिन ग्राम पंचायत के जिम्मेदार, ग्रामीणो की समस्याओं का निदान नहीं कर पा रह है। जिससे गांव की महिलाओं को इधर से उधर भटक कर गर्मी में पानी लाने को मजबूर होना पड़ रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत भामल में 175 घर की आबादी है और इन्हीं आबादी क्षेत्र में ग्रामीणों को पानी की पूर्ति ग्राम पंचायत द्वारा कभी 8 दिन में तो कभी 15 या 20 दिनो में एक-एक मोहल्ले वॉइस नल में पानी सप्लाई की जा रही है । लेकिन फिर भी पानी की समस्या विकराल रूप लिए सामने खड़ी है लेकिन ग्राम पंचायत है कि पानी की व्यवस्था नहीं कर पा रही है। बताते हैं कि, ग्राम पंचायत भामल में पानी के लिए कोई भी कर वसूली नहीं ली जाती है। यहां जब भी 5 वर्ष में चुनाव होते हैं तो सरपंच अपनी जुबान से फ्री में पानी पिलाने का वादा करते हैं। इस वादे के मुताबिक ग्रामीण यहां कर भी नहीं देते है जिसके कारण पूरी व्यवस्था चरमराई हुई है। पानी सप्लाई की ग्राम पंचायत अपने स्तर पर पूरी व्यवस्था करती है। बताते हैं पूर्व में ग्राम पंचायत में पर्याप्त मात्रा में पानी था लेकिन 8 लाइन एक्सप्रेस-वे में कुआं जाने के बाद पानी की काफी परेशानी से ग्रामीणों को गुजरना पड़ रहा है।

केशव डोडिया, कालू सिंह राठौड़, कोदर सिंह जादव, विक्रम राठौर आदि ने बताया कि, हमारे तेजाजी मोहल्ले में 15से20 दिन में एक बार ही नल मे पानी दे रहै है। बाकी सभी जगह सरपंच अपने हिसाब से समय-समय पर पानी पहुंचा रहे हैं लेकिन हमारे इधर पानी ही नहीं पहुंच रहा है जिससे पानी की समस्या बनी हुई है। ग्राम पंचायत को हमारे मोहल्ले की तरफ जल्द से जल्द पानी की व्यवस्था करनी चाहिए। गर्मी के दिनों में महिलाओं को परेशान नहीं होना पड़े यह हमारी गुजारिश है।

### जल जीवन जल मिशन में भी हुआ टंकी का निर्माण लेकिन ग्राम भामल को नहीं जोड़ा

केंद्र सरकार द्वारा चलाई जारी जल जीवन जल मिशन के तहत करीबन ढ़ाई करोड़ की लागत से ग्राम पंचायत भामल के मादलदा रोड पर टंकी का निर्माण किया गया। इस टंकी से ग्राम पंचायत भामल के फलिया वडलीपाड़ा, ढ़ोलखरा, रूपारेल, आमलीफलिया आदि जगह टंकी से पानी सप्लाई किया जाता ह पर ग्राम भामल में इस टंकी से पानी सप्लाई नहीं किया जाता है। क्योंकि नियमों के मुताबिक इसको जल जीवन जल मिशन में नहीं जोड़ा गया है। जानकारी रखने वाले बताते हैं कि, पीएचई द्वारा पूर्व में यहां पाइपलाइन की व्यवस्था कर दी गई थी। इसलिए जल जीवन जल मिशन में इसको नहीं जोड़ा गया है। ग्राम भामल के ग्रामीणों का कहना है कि, टंकी से भी हमको पानी दिया जाए ताकि गर्मी में हमें परेशान नहीं होना पड़े। आखिर ग्राम पंचायत भामल में क्यों पानी की टंकी से पानी नहीं दिया जा रहा है यह विचारनीय प्रश्न है।

# प्रधानमंत्री ग्राम सड़क पर दौड़ रहे हैं ओवरलोड डंपर जिम्मेदार नहीं कर रहे हैं कोई कार्रवाई

माही की गूंज, खवासा।
सुनिल सोलंकी

ग्रामीण अंचलों में सुगम एवं सरल रास्ते बनाने के लिए शुरू की गई प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना इन दिनों भारी वाहन चलने से क्षतिग्रस्त हो रही है।

एक तरफ सरकार लाखों रुपए सड़कों पर इसलिए खर्च करती है ताकि आने जाने वाले राहगीरों को किसी प्रकार की तकलीफ ना हो और उन्हे बिना परेशानी के गतव्य तक पहुंचने में मददगार हो। लेकिन कुछ नासमझो और सिरफिरो की नादानी और अधिकारियों की मिली भगत का ही नतीजा है कि, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बनी हुई सड़कों पर 8 टन से अधिक वजन के डंफर बेरोक टोक दौड़ रहे हैं और सड़क को छल्ली करने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। दरअसल इसमें सबसे बड़ा मसला खनिज विभाग का है गीट्टी के अवैध परिवहन पर इन्हें सरकारी और सरपट दिखने वाली सड़कों के माध्यम से होता है। अधिकारियों को वैसे तो ध्यान होता ही नही है, होता भी है तो सिर्फ हाईवे पर ऐसे में डंपर चालक अधिकारियों की नाक के नीचे खुले आम बेधड़क अवैध तरीके से गिट्टी राजस्थान की तरफ ले जा रहे हैं। जबकी कलेक्टर के साफ निर्देश है कि, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना तक बनी सड़कों पर किसी भी परिस्थिति में 8 टन से ज्यादा वजन के वाहन को ना गुजरने दिया जाए। लेकिन कुछ विभागीय अधिकारी कलेक्टर के आदेशों को भी खूंटी पर टांग दिया है।

### खनिज के अवैध परिवहन पर भी मूंद रखी आंखें

सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इन दिनों भामल होते हुए 3 किलोमीटर दूर राजस्थान की सीमा पर पाटन थाने के अंतर्गत पांणदा ग्राम में किसी सरकारी रोड का कार्य शुरू किया गया है। जिसमें भामल के ही मादलदा ग्राम पंचायत के कलदेला से गिट्टी क्रेशर मशीन से यह डंपर भामल होते हुए राजस्थान की ओर दिनभर व रात के साए में निकल रहे हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पाणदा ग्राम में कोई रोड का कार्य या डेम ठेकेदार के माध्यम से शुरू हुआ व यह गिट्टी धड़ल्ले से ले जा रहा है। डंपर राज.पासिंग है जिनका न. आरजे 18 जीए 5788 है जो अवैध तरीके से गिट्टी ढो रहा है। जिस पर खनिज विभाग कोई ध्यान ही नहीं दे रहा है। जिले के प्रशासनिक अधिकारियों को ईस और ध्यान देकर उनके ऊपर वेधानिक कार्रवाई करनी चाहिए ताकि ग्रामीण अंचलों में बनी प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना को इस तरह से नुकसान नहीं पहुंचा पाए। ओवरलोड कई डंपर धड़ल्ले से निकल रहे हैं लेकिन जिम्मेदार है की कार्रवाई से परहेज कर रहा है

### 8 टन के रोड पर 40 टन का खेल

सूत्रों के मुताबिक अधिकांश वाहन की आवाजाही रात के अंधेरे में होती है ताकि कोई भी इन्हें रोक ना सके इसी कारण से 8 टन तक लौड वाले रोड पर 40-50 टन के वाहन मदमस्त होकर चलते हैं और सड़कों को धराशाई कर देते हैं। गौरतलब है कि, पिछले कुछ दिनों से भामल बेडावा मार्ग पर बना प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से रोड़ पर अधिक ओवरलोड डंपर गुजर रहे हैं।

### आखिर ग्रामीणों का क्या दोष

ग्रामीणों का कहना है कि, बहुत चक्कर काटने के बाद प्रशासन ने हमारे गांव में सड़क बनाता था ताकी आवागमन में कोई परेशानी ना हो। लेकिन सड़क बन जाने के बाद बड़े और भारी वाहन का आवागमन शुरू हो जाता है जिससे सड़के खराब हो जाती है। अधिकारी और अवैध परिवहन करने वालो की मिलीभगत का खामियाजा ग्रामीणों को सड़कों के खराब होने की वजह से भुगतना पड़ता है। ग्रामीणों का कहना है कि, अधिकारियों को इस तरफ ध्यान देना चाहिए कि, अवैध परिवहन की वजह से खराब सडके ना हो और शासन को चुना भी ना लगे।

# सड़क पर घूमती रह जाती पुलिस और गली-गली मे घूमते है चोर

## चौकी क्षेत्र में कई जगह चोरियां हुई तो कई जगह चोरी का प्रयास पर पुलिस रिकॉर्ड साफ के साफ

माही की गूंज, खवासा।

कहते हैं एक बच्चा भी झूठ बोलता है तो तुरंत झूठ को पकड़ कर उसका पर्दाफाश करना चाहिए ताकि बच्चा अगली बार झूठ न बोले। क्योंकि एक के बाद एक झूठ अपराध का रूप धारण कर लेता है। वहीं अगर कोई अपराध करता है चाहे वह अपराध छोटा ही क्यों नहीं माना जाए पर अपराध तो अपराध ही होता है इसलिए पुलिस द्वारा हर अपराध का खुलासा होना चाहिये।

खवासा या खवासा चौकी क्षेत्र की बात करें तो यहां चोर अपना काम पूरी मुस्तेदी से करते हैं ओर पुलिस शायद हाथो में चुडिया पहन कर ही बैठी रहती है। चोर खेतों में लगे किसानों के कृषि यंत्र व इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की चोरी आए दिन होती रहती है। तो कई बार चोर, चोरी करने आते हैं पर वह किसी कारण सफल नहीं हो पाते हैं। इसी तरह चोर घरों व दुकानों में भी सेंध लगाकर चोरियों को अंजाम देते हैं और कई बार चोरी करने आए चोर, चोरी करने में असफल हो जाते हैं पर अगली चोरी को अंजाम देने की उनकी प्लानिंग जारी ही रहती है। खवासा की बात करें तो गोपाल कॉलोनी से लेकर गांव के कई मोहल्ले में चोरो ने चोरी की लेकिन नहीं चोर पकड़ाए और न ही कभी पुलिस का रिकॉर्ड चोरी की रिपोर्ट के साथ खराब हुआ। क्योंकि पुलिस, चोरी के बाद रिपोर्ट ही दर्ज नहीं करतीं। नतीजन चोर आए दिन गली-गली में घूम चोरी को अंजाम देने का प्रयास करते हैं और पुलिस रात्रि में सायरन के साथ अपने वाहन में मुख्य सड़कों पर घूमती और अपने गश्त कार्य की इतिश्री करती।

पिछले दिनों ही बस स्टैंड के आगे बामनिया मुख्य मार्ग पर पुलिस चौकी से कुछ ही दूरी पर देवेंद्र वागरेचा की होटल में सेंध लगाकर सेव-नमकीन व मिठाई की चोरी चोट्टों ने की थी। वहीं सोमवार-मंगलवार की रात्रि में जींस,शर्ट व टीशर्ट पहने युवा आयु के चोर नकाब पहन चोरी को अंजाम देने हेतु ग्राम की गलियों में घूमते रहे वहीं उक्त चोरों ने कुम्हार मोहल्ले में स्थित नितिन कुमार सुरेश चंद्र चोपड़ा की कपड़े के शोरूम में सेंध लगाने का प्रयास किया। चोरो ने ताले भी तोड़ने का प्रयास किया वहीं चोरों की नजर सीसीटीवी कैमरे पर पड़ी तो वह कैमरा भी तोड़कर निकाल लिया। लेकीन नकाब पोश चोर सीसी टीवी केमरे में केद हो गए। माना जा रहा है कि चोर उक्त कपड़े के शोरूम में चोरी को अंजाम दे देते पर मोहल्ले में किसी के जगने व बाहर आने के कारण चोर सजग हो गए और वह बिना चोरी किए रफू चक्कर हो गए।

बता दे की नवापाड़ा रोड पर क्रष्णलाल चौहान की पल्ली की दुकान है। उक्त दुकान को भी युवा वर्ग के चोरो ने टारगेट किया और 15 मई को मकान के उपर चढ 1 प्लास्टिक चद्दर को तोड अन्दर घुसे और दुकान के अंदर आराम से चोरी को अंजाम दिया और सभी सीसी टीवी केमरे तोड कर गए। लेकिन 2 चोर केमरे में केद हो गए। विड़ियो में दिख रहा की चोरो के नकाब निकलते रहै। यहा चोर फाईबर प्लाई से बना गल्ला जिसमे कुछ नगदी व थे जो चुरा ले गए। पुलिस चाहै तो उक्त विडियो से तहकीकात कर चोरो तक पहुच सकती है लेकिन पुलिस ऐसा नही करेगी ये तय है। उक्त नवापाड़ा मार्ग पर ही प्रकाश कोटवाल के वेड़ में बंधी एक भेस पूर्व में चोर, चोरी कर ले गए थे लेकिन उसका भी कोई खुलासा नहीं होने के चलते चोरों ने कुछ माह पूर्व ही फिर से किसान प्रकाश कोटवाल के वेड़ में सेंध लगाकर तीन भैंसों की चोरी करने में चोर सफल हो गए। उक्त चोरी का भी पुलिस ने कोई खुलासा नहीं किया।

हम यहां यही कहना चाहते हैं कि, प्रकाश कोटवाल के वेड से चोरी हुई एक भैंस का खुलासा पुलिस कर देती तो तय है चोर दूसरी चोरी की घटना को अंजाम देकर उसी वेड़ में तीन भैंसों की चोरी नहीं होती। लेकिन पुलिस चोरी होने के बाद भी अपना रिकॉर्ड साफ सुथरा रखने के लिए एफआईआर दर्ज नहीं करती है और नहीं किसी चोरी का खुलासा करती है। यानी पुलिस इन अपराधों को छोटा अपराध मान इन चोरिया को नजर अंदाज किया जाता है नतीजन पुलिस ही अपराधों को नजर अंदाज कर बड़े अपराध को न्योता देती नजर आती है। वहीं पुलिस की उक्त कार्य प्रणाली के चलते कई पीड़ित चोरी होने या चोरी का प्रयास होने के बाद भी पुलिस को सूचना या रिपोर्ट नहीं करते हैं। जिससे साफ होता है कि पुलिस आम जनता में अपना विश्वास खो चुकी है।

पुलिस को अपना विश्वास कायम करना है तो पुलिस को संकल्प लेना होगा कि जब एक बच्चा झूठ बोलता है तो उसका जीवन सुधारने हेतु एक माता-पिता उस झूठ को पकड़ उसका खुलासा करते हैं तो कोई अपराधी अपराध करता है तो उसे बड़ा अपराधी बनने से पूर्व छोटे अपराध में ही उसका खुलासा पुलिस अपने सत्य निष्ठा के साथ करेगी। पुलिस का उक्त संकल्प ही क्षेत्र या कहीं भी छोटी बड़ी चोरियों के खुलासे के साथ बड़े अपराध को खत्म कर सकती है। लेकिन पुलिस ऐसा करेगी क्षेत्रवासियो को विश्वास नही है। आगे यह देखना दिलचस्प रहेगा की पुलिस संकल्पित होकर ऐसे अपराधो में कार्रवाई कर जनता का विश्वास कायम करेगी या पुलिस हाथो में चुड़िया पहन चोरो को चोरिया करने हैतु न्यौता देती रहैगी।

15 मई को क्रष्णलाल चौहान की दुकान में 2 चोर चोरी करते हुए।

सोमवार-मंगलवार की रात्रि में कपड़ा शो रूम में चोरी करने आए 3 चोर सीसी टीवी केमरे में हुए केद।

## संपादकीय

# आर्थिक प्रतिबंध से उभरते ईरान को एक ओर झटका

मध्यपूर्व की कूटनीति व सामरिक रणनीति में खासी दखल रखने वाले ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की हेलीकॉप्टर दुर्घटना में हुई दुखद मौत के कारणों को लेकर कयासों का दौर जारी है। नि:संदेह, राष्ट्रपति रईसी व विदेश मंत्री समेत कई महत्वपूर्ण अधिकारियों की अप्रत्याशित मौत से ईरान सदमे में है। हालांकि, इब्राहिम रईसी की गिनती ईरान की इस्लामिक क्रांति के प्रतिनिधि चेहरों व कट्टरपंथी नेता के रूप में होती रही है। खासकर ईरान में राजनीतिक विद्रोहियों के साथ क्रूरता व पिछले दिनों हिजाब विरोधी आंदोलन के दमन को लेकर उनकी आलोचना होती रही है। दरअसल, इस्लामिक क्रांति के बाद ईरान मध्यपूर्व में अमेरिकी प्रभुत्व के खिलाफ सख्ती से खड़े होने वाले देश के रूप में जाना जाता है। जिसके परमाणु कार्यक्रम पर नियंत्रण के मद्देनजर अमेरिका व पश्चिमी देशों ने सख्त आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं। इस आर्थिक संकट से निकलने के लिए इब्राहिम रईसी ने भरसक प्रयास भी किये। ईरान की इस्लामिक क्रांति का अनुसरण करने वाली राजनीति में उनका कद इतना ऊंचा था कि, उन्हें ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के उत्तराधिकारी का प्रबल दावेदार माना जाता रहा है। यद्यपि ईरान की विदेश नीति और परमाणु कार्यक्रम पर 85 वर्षीय खामेनेई का ही अंतिम अधिकार रहा है। निस्संदेह रईसी के अधूरे कार्यों को उनके उत्तराधिकारियों को पूरा करना होगा। हालांकि, रईसी की हेलीकॉप्टर दुर्घटना में हुई मौत में इस्राइल की भूमिका को लेकर तमाम कयास लगाए जा रहे हैं। इसकी वजह यह भी है कि कुछ समय पहले सीरिया में इस्राइली हमले में एक ईरानी जनरल के मारे जाने के बाद कुछ सप्ताह पूर्व क्रुद्ध ईरान ने इस्राइल पर सैकड़ों मिसाइलों व ड्रोन से हमले किये थे। शंका की वजह यह भी कि इस घटनाक्रम के कुछ सप्ताह बाद यह हादसा हुआ है। दरअसल, इस्राइल पर हमलावर रहने वाले हमास व हिजबुल्ला विद्रोहियों को दिये जाने वाले आर्थिक व नैतिक समर्थन के चलते ईरान हमेशा से ही इस्राइल के निशाने पर रहा है। सात अक्तूबर को इस्राइल पर हुए हमास के भीषण आक्रमण के पीछे भी ईरान का हाथ होने का आरोप लगाया जाता रहा है।

दरअसल, ईरान में इस्लामिक क्रांति के 45 वर्ष के इतिहास में सत्ताधीशों की विदाई, मौत व दुर्घटनाओं का एक लंबा इतिहास रहा है। ऐसे में वहां इस तरह की व्यवस्था बना दी गई है कि एक शासन प्रमुख के जाने के बाद उसकी वैकल्पिक व्यवस्था तुरंत कर दी जाती है। यही वजह है ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने ईरानियों को भरोसा दिलाया है कि देश की शासन व्यवस्था में किसी तरह का व्यवधान नहीं आएगा। इसी क्रम में उन्होंने प्रथम उप-राष्ट्रपति मोहम्मद मोखबर को देश का कार्यवाहक राष्ट्रपति नियुक्त किया है। ईरानी संविधान के हिसाब से पचास दिन के भीतर नये राष्ट्रपति का चुनाव होना जरूरी है। बहरहाल, ईरान में सत्ता के इस नवीनतम घटनाक्रम पर पश्चिमी देशों तथा भारत समेत अन्य हितधारकों की निगाहें रहेंगी। उल्लेखनीय है कि पिछले हफ्ते ही नई दिल्ली व तेहरान के बीच ईरान के रणनीतिक बंदरगाह चाबहार के संचालन के लिये दस साल के अनुबंध पर हस्ताक्षर किये गए थे। दरअसल, चाबहार डील इब्राहिम रईसी की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में गिनी जाती थी। इस समझौते को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी मील का पत्थर बताया था, जो भारत को अफगानिस्तान व मध्य एशियाई क्षेत्र में व्यापार संचालित करने की सुविधा प्रदान करता है। यही वजह है कि अमेरिकी वक्र दृष्टि के बावजूद ईरान व भारत ने इस समझौते को अंतिम रूप देकर अपने संबंधों को मजबूती दी है। दरअसल, विगत में ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ बेहतर संबंध विकसित कर लिये थे। यही वजह थी कि ईरान को ब्रिक्स समूह के देशों में शामिल करने के मामले में तेजी आ सकी थी। उल्लेखनीय है ब्रिक्स देशों के इस समूह में रूस, चीन, दक्षिण अफीका, ब्राजील तथा भारत शामिल हैं। विश्वास किया जाना चाहिए कि रईसी के उत्तराधिकारी के साथ भारत-ईरान संबंधों को नये आयाम मिल सकेंगे।

# खटाखट-फटाफट की सतही राजनीति से बचे लोकतंत्र

विश्वनाथ सचदेव

हमारे समय के महान कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण ने अपने एक कार्टून में नेताओं के कार्टून न बनाने की बात की थी। उन्होंने लिखा था, 'अब मैं नेताओं के कार्टून नहीं बनाता, क्योंकि अब स्वयं कार्टून नेता बनने लगे हैं।' बरसों पहले बनाया गया था यह कार्टून, और लक्ष्मण के बनाये अनेक कार्टूनों की तरह यह आज भी प्रासंगिक हैदृ शायद उस समय से कहीं ज़्यादा जब यह कार्टून बनाया गया था। इस कार्टून में लक्ष्मण का ट्रेडमार्क 'आम आदमी' हैरानी और चालाक-सी मुस्कान के साथ इस घोषणा को होते सुन-देख रहा है!

आज भी आम आदमी के चेहरे पर वही मुस्कान है। पत्रकारिता में कभी कहा जाता था, 'एक चित्र सौ शब्दों के बराबर होता है। यही बात कार्टून पर भी लागू होती है। जहां तक नेताओं के कार्टून बन जाने का सवाल है आज की राजनीति में इसके उदाहरण खोजने की आवश्यकता नहीं हैदृ एक ढूंढ़ो हज़ार मिलते हैं।

चुनावों का मौसम अभी चल रहा है। कुछ ही दिन में चुनाव के परिणाम भी आ जाएंगे, नई सरकार बन जायेगी। नये-पुराने नेता कुर्सियां संभालेंगे। तब किसी लक्ष्मण के 'आम आदमी' के चेहरे पर वैसी ही मुस्कान होगी जो उस कार्टून में दिख रही थी। पर आज की राजनीति को देखते हुए यह समझना ज़रूरी है कि मुस्कुराना पर्याप्त नहीं है। यह स्थिति अपने आप में कम पीड़ादायक नहीं है कि हमारी राजनीति का स्तर लगातार नीचे खिसक रहा है। देश के राजनीतिक नेतृत्व ने इस चुनाव-प्रचार के दौरान नई गिरावट को छूने का जैसे एक रिकॉर्ड बनाया है। विभिन्न दलों के राजनेताओं में जैसे प्रतियोगिता चल रही थी घटिया राजनीति का उदाहरण प्रस्तुत करने की। हमारी राजनीति सिद्धांतों और मूल्यों के बजाय जुमलों में सिमट कर रह गयी है। जुमले की भी एक नयी परिभाषा ईजाद की है हमारे नेताओं नेदृ आप चाहें तो इसे 'लफ्फाजी' नाम दे सकते हैं।

था कोई जमाना जब हमारे देश में चुनाव की तुलना यज्ञ से की जाती है। दूसरे आम चुनाव की बात है। चुनावी सभाओं में एक कविता सुनाई देती थीदृ 'ओ मतदाता, तुम भारत के भाग्य-विधाता/ राजसूय सम भारत के हित/ यह चुनाव है होने जाता/ कागज का यह नन्हा-टुकड़ा भारत माता का संबल है/ वोट नहीं है तेरे कर में, महायज्ञ-हित तुलसी दल है।' आज हमारे राजनेता उस तुलसीदल के लिए झूठ और फरेब का सहारा ले रहे हैं। त्रासदी तो यह भी है कि जो जितना बड़ा नेता है वह उतना बड़ा झूठ बोल रहा है। घटिया बोलों की एक प्रतिस्पर्धा चल रही है। किसी भी प्रकार के शर्म या लिहाज़ के लिए हमारी राजनीति में जैसे कोई जगह नहीं बची।

हमारे नेता यह मानकर चल रहे हैं कि हल्की-फुल्की बातों से मतदाता को बरगलाया जा सकता है। ताजा उदाहरण 'खटाखट' वाली राजनीति का है। कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने एक चुनावी सभा में 'खटाखट-खटाखट' का प्रयोग क्या किया, राजनेताओं को जैसे नया खिलौना मिल गया। राहुल गांधी ने कहा था, 'मोदी अपने धनवान मित्रों को पैसा दे रहे हैं, पर मैं पैसा आपको दूंगा खटाखट-खटाखट। यहां खटाखट से उनका आशय तेजी से पैसा देना था। प्रधानमंत्री मोदी को यह शब्द पसंद आ गया और दूसरे ही दिन उन्होंने एक चुनावी सभा में 'खटाखट' शब्द के माध्यम से राहुल गांधी का मज़ाक उड़ाने का अभिनय किया। खटाखट शब्द में कहीं कुछ ग़लत नहीं है। वैसे ही जैसे 'दीदी, ओ दीदी' कहना कहीं से ग़लत नहीं लगता। पर पिछले चुनाव में जिस तरह 'ओ दीदी' उचारा गया था, उसे भद्र भाषा का उदाहरण तो नहीं कहा जा सकता। इस खटाखट शब्द की भी जिस तरह नकल उतारी गयी, उसे हास्यास्पद तो कहा ही जा सकता है!

राहुल गांधी ने अपने भाषण में देश की हर गरीब महिला के बैंक खाते में 8 हजार 500 रुपये खटाखट जमा करवाने की बात कही थी। प्रधानमंत्री जी ने इस खटाखट शब्द से उनका मज़ाक उड़ाया जो खटाखट पैसा देने की बात कर रहे थे। मतदाताओं को अपने नेताओं से कुछ गंभीर आचरण की अपेक्षा भी होती है। लेकिन हमारे नेता तो मतदाता को बच्चों की तरह रिझाने में विश्वास करते हैं!

प्रधानमंत्री मोदी न जाने कब से देश के मतदाताओं को पांच किलो अनाज से रिझा रहे हैं। पहले देश के अस्सी करोड़ गरीबों को कुछ अर्से के लिए प्रतिमाह पांच किलो अनाज दिया गया था, फिर चुनाव से ठीक पहले यह कह दिया गया कि अगले पांच साल तक यह खैरात बंटती रहेगी। अब कांग्रेस के अध्यक्ष ने कहा है कि यदि उनकी सरकार बनती है तो वह पांच किलो के बजाय दस किलो अनाज प्रति माह देंगे। यही नहीं, यह बात कहीं इस तरह से कही जाती है मानो प्रधानमंत्री अथवा विपक्ष के नेता अपनी जेब से खर्च करके मतदाता को अनुगृहीत कर रहे हैं! लाभार्थी नाम दिया गया है सरकारी सहायता पाने वालों को। इसी तरह 'रेवड़ी बांटने' की बात भी हुई थी। सत्ताधारी पक्ष जनता को अनुदान देने को कल्याणकारी कार्य बताता है और विपक्ष की सरकारों को 'रेवड़ियां' न बांटने की सलाह देता है। चुनाव-प्रचार की इस इस सोच पर सवाल उठना ही चाहिए।

सवाल इस बात पर भी उठाना चाहिए कि पंथ-निरपेक्ष देश में धर्म के नाम पर वोट मांगने की इजाज़त कैसे दी जा रही है? अयोध्या में बने राम मंदिर पर 'बाबरी ताला' लगाये जाने के षड्यंत्र की बात का आखिर क्या मतलब है? कैसे कोई राजनेता यह कह सकता है कि, 'तुम्हारे' मंगलसूत्र भी उनको दे दिये जाएंगे? यह 'तुम्हारे' कह कर किसे संबोधित किया जा रहा है और यह 'उनको' का क्या मतलब है? हमारे संविधान-निर्माताओं ने बहुत सोच-समझ कर देश को धर्म-निरपेक्ष घोषित किया था। विभाजन के समय देश में जो परिस्थितियां बन गयी थीं, उन्हें देखते हुए आसान नहीं था इस प्रकार का निर्णय लेना। संविधान-सभा में इस सबको लेकर पर्याप्त विचार-विमर्श हुआ था और पाकिस्तान को मुस्लिम राष्ट्र घोषित किये जाने के बावजूद हमने देश को धर्मनिरपेक्ष रखने का निर्णय लिया था। वस्तुतः यह निर्णय मानवता के पक्ष में लिया गया था। सारी दुनिया को रास्ता बताया था हमनेदृ मनुष्यता का रास्ता। आखिर धर्म के नाम पर संकीर्णता वाली सोच हमें कहां ले जायेगी?

यह जनतांत्रिक मूल्यों की सफलता का ही एक उदाहरण है कि हमारे देश में नियम से चुनाव हो रहे हैं। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। जनतांत्रिक मूल्यों को आचरण में उतारना ही इस सफलता की असली कसौटी है। इन्हीं मूल्यों का तकाज़ा है कि धर्म को राजनीति का हथियार बनाने की मानसिकता से उबारा जाये। यह 'हम' और 'वे' वाली राजनीति समाज को बांटने वाली है, हमें सिर्फ 'हम' वाली राजनीति की आवश्यकता है। 'हम भारत के लोग' ने अपने लिए एक संविधान बनाया था, यह हर भारतीय को सम्मान और स्वाभिमान से जीने का अधिकार देता हैदृ सबका साझा है यह अधिकार। इस अधिकार को खटाखट और फटाफट वाली घटिया राजनीति का शिकार नहीं होने दिया जा सकता। हमारे नेताओं की चुनावी सभाएं बताती हैं कि यह खटाखट वाली राजनीति उन्हें दाता बना रही है और नागरिक को इस दाता की कृपादृष्टि का पात्र।

यही नहीं अब हमारे नेता ऐसी गारंटियां भी देने लगे हैं, जिनका कोई आधार उनके पास नहीं है। इस 'गारंटी राजनीति' की शुरुआत कर्नाटक के पिछले चुनाव में कांग्रेस ने की थी, फिर भाजपा ने इसे लपक लिया। प्रधानमंत्री ने नहले पर दहला चलते हुए 'गारंटी पूरे होने की गारंटी' वाली चाल चली। अब यानी हमारी राजनीति के कर्णधार अपने आप को देश के सामान्य नागरिकों से भिन्न मानते हैं, कुछ ऊंचा मानते हैं। विषमता का यह चेहरा हमारी राजनीति का घटिया पक्ष ही दिखाता है। स्वस्थ राजनीति का तकाज़ा है कि राजनेता स्वयं को मतदाता का स्वामी न समझें। वे भी नागरिक मात्र हैं, बस उनकी भूमिका कुछ भिन्न है। पता नहीं यह स्थिति कब आयेगी, कब वे ऐसा समझेंगे?

# हाईकोर्ट ने मांगा चुनाव आयोग से जवाब

कोलकाता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सब्यसाची भट्टाचार्य ने टीएमसी की याचिका पर चुनाव आयोग को कड़ी लताड लगाई है। हाईकोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा, चुनाव आयोग पूरी तरह से संवैधानिक जिम्मेदारी को पूरा करने में असफल साबित हुआ है। हाईकोर्ट ने यह भी कहा,मे आश्चर्य चकित हूं, कि चुनाव आयोग को, जो कार्यवाही स्वयं संज्ञान लेते हुए करना चाहिए थी। टीएमसी द्वारा शिकायत किए जाने पर भी चुनाव आयोग द्वारा कार्यवाही नहीं की गई है। कोलकाता हाईकोर्ट ने आदर्श चुनाव संहिता का जिस तरह का उल्लंघन किया जा रहा है। उस पर चुनाव आयोग द्वारा चुप्पी साध रखी है। आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए भारतीय जनता पार्टी द्वारा चुनाव प्रचार एवं जो विज्ञापन जारी किए जा रहे हैं। चुनाव आयोग ने उस पर समय रहते कार्रवाई क्यों नहीं की। चुनाव आयोग द्वारा समय रहते कार्रवाई नहीं करने से चुनाव की निष्पक्षता एवं मतदाताओं के अधिकार प्रभावित हो रहे हैं। चुनाव प्रचार मे हर स्तर पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन राजनीतिक दलों द्वारा किया जा रहा है। उस पर चुनाव आयोग द्वारा कोई कार्यवाही नहीं करने पर कड़ी फटकार लगाई। चुनाव आयोग द्वारा जब कोई कार्रवाई नहीं की गई तब जाकर, टीएमसी ने हाईकोर्ट में याचिका दायर कर हाईकोर्ट से कार्रवाई की मांग की है। कोलकाता हाईकोर्ट ने इस मामले मे चुनाव आयोग और भाजपा को नोटिस जारी किया है। अगले आदेश तक के लिए आपत्तिजनक विज्ञापनों पर रोक लगाने के आदेश दिए हैं। चुनाव आयोग और भारतीय जनता पार्टी से जवाब आने के बाद अगली सुनवाई होगी। कोलकाता हाईकोर्ट के इस निर्णय का असर चुनाव आयोग पर राष्ट्रीय स्तर पर बाध्यकारी है।



सनत जैन

वर्तमान में जो चुनाव आयुक्त हैं। वह बहुत सारी गलतियां और पक्षपात कर रहा है। यह सारी जानकारी न्यायपालिका के संज्ञान में आ चुकी है। चुनाव आयोग सरकार के नियंत्रण में काम करता हुआ दिख रहा है। निष्पक्ष और निर्भीक होकर मतदाता मतदान कर पाए। इसकी स्थितियां,चुनाव आयोग के कारण निर्मित नहीं हो पा रही हैं। जिसके कारण राजनीतिक दलों को हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की शरण में जाना पड़ रहा है। सुप्रीम कोर्ट में भी चुनाव आयोग से संबंधित मामलों की सुनवाई होने जा रही है। 2014 में जिस तरह से मतदान का डेटा चुनाव आयोग पोर्टल पर उपलब्ध कराता था। 2019 में उसमें थोड़ी कटौती हुई। 2024 में जिस तरह से मतदान का आंकड़ा चुनाव आयोग द्वारा पोर्टल पर पेश किया गया है। उसको लेकर यचिकायें सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। आदर्श आचार संहिता के मामले में चुनाव आयोग कोताही बरत रहा है। चुनाव आयोग की परंपरा रही है, कि हर चरण के मतदान के बाद चुनाव आयोग प्रेस को सारी जानकारी उपलब्ध कराता था। चुनाव आयोग ने अब इसे भी बंद कर दिया है। इन सब मामलों की सुप्रीम कोर्ट में 24 मई से सुनवाई होने जा रही है। चुनाव आयुक्त की नियुक्ति सरकार द्वारा की गई है। नियुक्ति के लिए सुप्रीम कोर्ट ने जो आदेश दिया था। उसे सरकार ने नहीं माना। सरकार ने एक नया कानून बना दिया। वर्तमान तीनों चुनाव आयुक्त सरकार द्वारा अपनी मनमर्जी से नियुक्त किए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन किया जा रहा है। इसकी शिकायत विपक्षी दलों ने चुनाव आयोग से की है। इसके बाद भी चुनाव आयोग ने प्रधानमंत्री को कोई नोटिस जारी नहीं किया। पांचवें चरण का मतदान समाप्त हो चुका है। केवल दो चरण का मतदान बाकी है। सुप्रीम कोर्ट की नजर मे यदि चुनाव आयोग, निष्पक्षता के साथ काम नहीं कर रहा है। किसी पार्टी विशेष को लाभ पहुंचाने के लिए काम कर रहा है। ऐसी स्थिति में चुनाव आयुक्त के ऊपर आपराधिक मुकदमा तक चलाने की बात होने लगी है। यदि चुनाव आयोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों का सही तरीके से पालन नहीं कर अपराध कर रहा है। ऐसी स्थिति में न्यायपालिका के ऊपर संवैधानिक जिम्मेदारी है। सर्वोच्च न्यायपालिका जनता को जो संवैधानिक अधिकार मिले हैं, उसकी रक्षा सुप्रीम कोर्ट ही कर सकती है।

# पीओके की नही पीके की भविष्यवाणी

आजकल भारत में दो ही चीजें ज्यादा चर्चित हैं । एक पीओके और दूसरे पी के। दोनों का रिश्ता भारत से और भारतीय जनता पार्टी से। भारत की जनता से इन दोनों का कोई लेना-देना नहीं है । पीओके यानी पाक अधिकृत कश्मीर और पीके अर्थात प्रशांत किशोर। इन दोनों के बिना 2024 के आम चुनाव में भाजपा की दाल गलती नजर नहीं आती। भारत का विपक्ष तो दाल गलाना और खाना दोनों भूल चुका है। जो दाल पकता है उसी में काला खोजा जाता है। आज हमें भी पीओके और पीके में दाल में काला नजर आने लगा है।

पीओके यानि पाक अधिकृत कश्मीर एक पुराना जख्म है। इतना पुराना की आज की पीढी को इसके बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं, लेकिन भाजपा की सरकार देशवासियों को चन्दा मामा दूर के की तर्ज पर पीओके के किस्से सुनाती है, ख्वाब दिखाती है। इस बार चूंकि पांचवा चरण बीतने के बावजूद कोई पुलवामा नहीं हुआ इसलिए सारा जोर पीओके के ऊपर है। सरकार ने जितनी आसानी से जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटा दी, उतनी ही आसानी से वो पीओके को भारत में दोबारा शामिल करने की बात कर रही है। पीओके को वापस लेना सचमुच बड़ी बात है। और ये बड़ी बात केवल बड़े -बड़े लोग या बेवड़े लोग कर सकते हैं। कम से कम सामान्य आदमी तो ऐसी बातें न सोच सकता है और न कर सकता।

पीओके का किस्सा बहुत लंबा है, उतना ही लंबा जितना की आज के नेताओं की जबान। चौड़ी छाती और लम्बी जबान वाले लोग बिरले ही होते हैं। पीओके के बारे में ज्यादा जानना हो तो इतिहास में जाना पडेगा। फिर गांधी, नेहरू को कोसना पडेगा। लेकिन अभी ये सब करने की फुरसत किसे है? सब चार सौ पार करने में लगे है। पीओके मिले या न मिले लेकिन चार सौ पार करना देश की सेहत के लिए बहुत जरूरी है। भारत की जनता इस लक्ष्य को हासिल करने में मदद करे या न करे लेकिन पीके यानि प्रशांत किशोर जरूर भविष्य वाणियां कारणें में आगे हैं।

पीके यानि प्रशांत किशोर एक भटकती आत्मा है। आपातकाल के बाद जन्में प्रशांत किशोर पेशे से राजनीति के रणनीतिकार ह। भविष्यवक्ता है लेकिन अपने ही भविष्य के बारे में नहीं जानते। 1977 में बिहार की धरती पार जन्मने प्रशांत किशोर की रणनीत्ति के फलस्वरूप नरेंद्र दामोदरदास मोदी देश के प्रधानमंत्री बन पाए ऐसी धारण है। पीके को 2014 के लोक सभा चुनाव, 2015 में बिहार विधान सभा चुनाव 2017 उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव और 2019 के आंध्र प्रदेश विधान सभा चुनाव के बाद 2021 में पश्चिम बंगाल चुनाव में तृण मोल कांग्रे की बड़ी जीत ने प्रशांत कुमार की दूकान तो जमाई लेकिन किसी राजनीतिक दल ने उन्हें जब राजनीति में हिस्सेदार नहीं बनाया तो बेचारे ने अपनी भटकती आत्मा को ढांढस बढ़ाने के लिए जन सुराज नाम का एक राजनितिक दल बना लिया।

हमेशा अशांत रहने वाले प्रशांत किशोर ने कहा है कि, मुझे लगता है कि मोदी सरकार की तीसरी पारी की धमाकेदार शुरुआत करेगी। केंद्र के पास शक्ति और संसाधन दोनों का और भी ज्यादा कंसंट्रेशन होगा। प्रशांत किशोर ने एक चैनल से से बातचीत में इस बात की भी भविष्यवाणी की है कि आखिर तीसरी बार में बीजेपी को कितनी सीटें मिलने की उम्मीद है. उन्होंने बीजेपी के लिए 300 सीटों का अनुमान लगाया है. उन्होंने कहा कि 2019 के चुनाव बीजेपी ने 303 सीटें कहां से हासिल कीं? 303 में 250 सीटें उत्तर और पश्चिम क्षेत्र से आई। प्रशांत किशोर ने कहा, पूर्व और दक्षिण में बीजेपी के पास लोकसभा में लगभग 50 सीटें हैं, इसलिए माना जाता है कि पूर्व और दक्षिण में बीजेपी की सीट हिस्सेदारी बढ़ रही है. यहां 15-20 सीटें बढ़ने की उम्मीद है, जबकि उत्तर और पश्चिम में कोई खास नुकसान नहीं हो रहा है।

राकेश अचल

पीओके भारत को दोबारा मिले या न मिले लेकिन प्रशांत भूषण को इस बार कम से कम पद्मभूषण पुरस्कार तो मिलना ही चाहिए। उनके पास तीसरा नेत्र है जो सबसे अलग देखता है और जनता को दिखने कि कोशिश करता है। बेहतर हो कि भाजपा जब तीसरी बार सत्ता में आये तब प्रशांत किशोर शोर करने के बजाय चुपचाप अपनी टटपुँजिया पार्टी को भाजपा में या उनकेअपने हठबंधन में शामिल कर ले। हकीकत ये है कि इस देश को न पीओके की जरूरत है और न पीके की। इस देश को जरूरत है साम्प्रदायिकता, महंगाई,बेरोजगारी और अहंकार से मुक्ति की।

देश की ईवीएम मशीनों में झाँकने का हुनर इस सस्य देश में सिर्फ दो लोगों के पास है। एक हैं केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और दूसरे प्रशनत किशोर उर्फ़ पीके। इन दोनों के मुंह में भरने के लिए भाजपा को घी और शक्कर का इंतजाम अभी से कर लेना चाहिए, क्योंकि पीके झूठ थोड़े ही बोलते हैं।

# भारत की धरती पर चीतों को भेजने से पहले अफ्रीका ने रखी बड़ी शर्त

माही की गूंज, मंदसौर। साहिल अगवान

कूनो नेशनल पार्क के बाद अब मंदसौर के गांधी सागर अभ्यारण में भी चीतों को बसाने की कार्य योजना है। बताया जा रहा है कि बारिश के बाद अफ्रीका से चीतों की खेप को गांधी सागर अभ्यारण में रखा जाएगा। हालांकि चीतों को भेजने से पहले अफ्रीका ने एक शर्त रख दी है। शर्त के मुताबिक पहले गांधी सागर अभ्यारण में मौजूद तेंदुओं को बाहर निकालना होगा।

बता दें कि, दक्षिण अफ्रीका के विशेषज्ञों ने गांधी सागर अभ्यारण का निरीक्षण किया था। इस दौरान विशेषज्ञों को तेंदुए होने की जानकारी मिली। चीतों में संक्रमण फैलने के खतरे को देखते हुए उन्होंने गांधी सागर अभ्यारण प्रबंधन से तेंदुओं को बाहर करने की शर्त रखी थी। अफ्रीकी विशेषज्ञों से मिले सुझाव के बाद वन विभाग ने निर्देश जारी किया है। वन विभाग के अपर मुख्य सचिव जेएन कंसोटिया ने गांधी सागर अभ्यारण से तेंदुओं को खदेड़ने की अधिकारियों को हिदायत दी है।

### चीतों के लिए तैयार गांधी सागर अभ्यारण

सूत्रों के मुताबिक गांधी सागर अभ्यारण में तैयारी शुरू हो गई है। चीतों के लिए 8 क्वॉरंटीन बाड़े बनाए गए हैं। सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। चीतों का इलाज करने के लिए एक मेडिकल यूनिट को भी तैनात किया गया है। माना जा रहा है कि बारिश के बाद ठंड में अफ्रीका से चीतों की खेप आ जाएगी।

गांधी सागर अभ्यारण के रावलीकुडी में 28 किलोमीटर लंबा बाड़ा बनाया गया है। बाड़ा 64 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। चीतों के लिए प्रति वर्ग किलोमीटर 20 शाकाहारी वन्य प्राणियों की आवश्यकता होती है, लेकिन वर्तमान में प्रति वर्ग किलोमीटर 15 ही शाकाहारी वन्य प्राणी हैं। 1250 वन्य प्राणी अभी तीन सेंचुरी से आना शेष हैं। बताया जा रहा है कि बारिश से पहले प्रति वर्ग किलोमीटर 20 शाकारी वन्य प्राणियों की संख्या हो जाएगी।

### सितंबर में नामीबिया से आए थे चीते

बता दें कि, 70 साल बाद भारत में चीतों को फिर से बसाया गया है। 17 सितंबर 2022 को श्योपुर के कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया से 8 चीते लाए गए थे। इसके बाद 18 फरवरी 2023 को दक्षिण अफ्रीका से चीते लाए गए। कूनो नेशनल पार्क के बाद अब गांधी सागर अभ्यारण में चीतों को बसाने की प्लानिंग है।

## लवजिहाद की घटना को लेकर एसपी के नाम सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, मंदसौर।

अखिल भारतीय बलाई महासंघ ने जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर अति पुलिस अधीक्षक गौतम सौलंकी को लव जिहाद की घटना को लेकर ज्ञापन सौंपा और जल्द कार्यवाही की मांग की। एडिशनल एसपी गौतम सोलंकी को दिए ज्ञापन में समाजजनों ने बताया कि नीमच जिले के मोखमपुरा निवासी युवती का हाल ही में भादवा माता मंदिर में सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह संपन्न हुआ था। शादी के बाद युवती 4 मई को पिपलियामंडी के बालागुड़ा गांव में चचेरी बहन की शादी में आई थी। यही से प्रेमी शकील उसे अपने साथ भगा ले गया।

परिजनों ने 5 मई को इसकी शिकायत पिपलिया मंडी थाने में दर्ज करवाई थी। 15 दिन बीत जाने के बाद भी युवती का कोई सुराग नहीं लग पाया। इसके बाद जांच में तेजी लाने व विवाहिता को जल्द तलाश करने की मांग को लेकर अखिल भारतीय बलाई समाज जनों ने एसपी के नाम ज्ञापन सौंपा है। समाजजनों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्दी ही विवाहिता को पुलिस ने तलाश नहीं किया तो आचार संहिता समाप्त होने के समाज तेज आंदोलन करेगा।

इस अवसर पर अखिल भारतीय बलाई समाज महासंघ के साथ विश्व हिंदू परिषद, सर्व समाज जनों के द्वारा आरोपी की जल्द गिरफ्तारी की मांग की गई।

ज्ञापन प्रदर्शन में अखिल भारतीय बलाई महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक खिंची, नीमच अध्यक्ष गुड्डू मालवीय, मालवीय बलाई समाज महिला संगठन जिला अध्यक्ष कमला बामनिया, युवा अध्यक्ष समरथ मालवीय, मंदसौर जिला अध्यक्ष रामचंद्र मालवीय गांधीनगर, गोविंद मालवीय, अर्जुन मालवीय आदि समाजजन मौजूद थे।

## तार चोर गैंग के तीन सदस्य गिरफ्तार बाकी की तलाश जारी

माही की गूंज, शाजापुर।

जिले की पुलिस को बड़ी सफलता हासिल हुई है, जहां तार चुराने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश पुलिस के द्वारा की जा रही है। आपको बता दें इन आरोपियों के द्वारा सोलर प्लांट के कई ड्रम तांबे के तार चुराए थे।

### 9 ड्रम तांबे के चुराए

शाजापुर जिले के मोहन बड़ोदिया थाना के अंतर्गत 30-31 जनवरी के बीच देर रात को बदमाशों ने दहरीपाल गांव में मौजूद सोलर प्लांट से 9 ड्रम तांबे के तार चुराकर फरार हो गए थे। वहीं, पुलिस को सूचना मिलने पर पुलिस ने अज्ञाप बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज करते हुए आरोपियों की तलाश शुरू कर दी थी।

### इन आरोपियों को किया गिरफ्तार

अज्ञात चोरों को पकड़ने के लिए पुलिस ने इलाके में मुखबिरों को सक्रिय कर दिया था। उन्हीं की सूचनाओं के आधार पर पुलिस तीन आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफल रही। पकड़े गए आरोपियों में जैकी पुत्र भगवान सिंह मक्सी कनासिया जिला उज्जैन, सलमान पुत्र जब्बार खां निवासी शंकरपुर जिला उज्जैन और जीवन पुत्र अंतरसिंह गुर्जर निवासी बोरदा गुर्जर जिला उज्जैन शामिल हैं।

### लाखों रूपए के कीमत के ड्रम बरामद

पुलिस ने इन तीनों आरोपियों के कब्जे से करीब लाखों रूपए के सोलर प्लांट के 9 तांबे के ड्रम बरामद किए हैं। वहीं इस कार्रवाई में थाना प्रभारी भरत सिंह किरार, प्रधान आरक्षक विनोद शर्मा समेत कई पुलिसकर्मियों ने सरहानीय भूमिका निभाई।

## पुलिए के नीचे गिरी तेज रफ्तार से आ रही बस, 2 की मौत 40 घायल

माही की गूंज, राजगढ़/ब्यावरा।

मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले में यात्री बस अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे जा गिरी। इस हादसे में दो यात्रियों की मौत हो गई, वहीं 40 लोग घायल हुए हैं। मिली जानकारी के अनुसार, इंदौर से अशोकनगर की ओर जा रही निजी यात्री बस आगरा-मुंबई हाईवे पर पचोर के पास अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे गिर गई। इस हादसे में हरिओम और एक अन्य यात्री की मौत हुई है, जबकि 40 से अधिक यात्री घायल हुए हैं। घायलों को शाजापुर और इंदौर उपचार के लिए रेफर किया गया है।

### घायलों को अस्पतालों में भेजा गया

बताया गया है कि, बस तेज रफ्तार से जा रही थी और उसका संतुलन बिगड़ गया। बस पुलिया से नीचे गिरी और यात्रियों में अफरा तफरी मच गई, साथ ही चीख पुकार भी सुनाई देने लगी। पुलिस को जैसे ही इस हादसे की सूचना मिली, एक दल मौके पर पहुंचा, वहीं स्थानीय लोग भी मदद के लिए आगे आए। राहत और बचाव कार्य चलाकर घायलों को विभिन्न अस्पतालों तक भेजा गया। यह हादसा जब हुआ तो मौके पर काफी अंधेरा था, मगर राहत और बचाव कार्य के चलते घायलों को सुरक्षित अस्पताल तक ले जाया गया।

### हादसे के वक्त सो रहे थे यात्री

एक यात्री ने बताया कि, हम सभी गहरी नींद में थे और अचानक एक झटका सा लगा और कुछ ही देर में नजर आया कि बस किसी गड्ढे में है। थाना प्रभारी आकांक्षा शर्मा ने बताया कि इस हादसे में दो यात्रियों की मौत हुई है, जिनमें एक की पहचान कर ली गई है और दूसरे की पहचान अभी तक नहीं हो सकी है। घायलों को पचोर के अस्पताल ले जाया गया जहां प्राथमिक उपचार हुआ और 22 घायलों को शाजापुर के अलावा पांच गंभीर को इंदौर भेजा गया है।

## 61 वर्षीय बुजुर्ग ने 2 वर्ष की बालिका से की ज्यादती, आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, मंदसौर।

मंदसौर के पिपलियामंडी थाना क्षेत्र में दो वर्षीय बच्ची के साथ ज्यादती का मामला सामने आया है। 61 वर्षीय बुजुर्ग ने बच्ची के साथ इस वारदात को अंजाम दिया।पुलिस ने आरोपी बुजुर्ग को गिरफ्तार कर केस दर्ज कर लिया है।

पिपलियामंडी पुलिस ने बताया कि, घर के बाहर खेल रही 2 वर्षीय बच्ची को 61 वर्षीय कमल पिता रामलाल खटीक कमरे में ले गया और दरवाजा बंद कर लिया, जहां उसने बच्ची के साथ ज्यादती की।

### पुलिस ने खुलवाया दरवाजा

इधर, बच्ची के परिजनों को वह नहीं दिखी तो उसे ढूंढा गया। वहीं पता चलने पर बुजुर्ग के घर का दरवाजा खुलवाने की कोशिश की। इस दौरान लोग भी इकट्ठा हो गए और पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। जिसके बाद पुलिस ने दरवाजा खुलवाया।

### पुलिस ने दर्ज किया प्रकरण

पुलिस ने बुजुर्ग व्यक्ति पर धारा 376, पॉक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है।

## बाल विवाह रुकवाने पहुंची पुलिस, परिवारों को दी समझाइश

माही की गूंज, रतलाम।

अक्सर देखने में आता है कि अच्छे घर चंद पैसे और शराब के लालच में आकर कम उम्र में ही लडकी का बाल विवाह कम एवं दोगुने उम्र के व्यक्ति से कर माता-पिता लड़कियों की जान और स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं उनकी इसी गलत सोच पर सृष्टि समाज सेवा समिति ने बाल विवाह कुप्रथा पर आधारित शार्ट नाट्य रूपांतरण बनाकर सृष्टि संस्था के सोशल मीडिया पर प्रसारित किया है।

संस्था अध्यक्ष सतीश टाक ने बताया कि आज भी हमारे समाज में बाल विवाह जैसी कुप्रथा चलन में है सच तो यह है कि गांवों में अभी भी कई समाज के लोग शान समझकर रूढ़िवादी परंपराओं को बढ़ावा दे रहे है और बच्चों का जीवन अंधकार मय बना रहे हैं।

संस्था के सदस्यों ने शॉर्ट नाट्य मंचन के माध्यम से पुरानी परंपराओं, कुप्रथा पर लगाम लगाकर जागरूकता लाने का प्रयास किया है। इस शॉर्ट नाट्य मंचन में बच्चों सहित उनके अभिभावकों ने भी अपना किरदार निभाया है। 4 मिनट की मूवी में बताया गया कि एक गरीब परिवार रहता है जिनकी पहले से ही दो लड़की होती है और तीसरी हो जाती है। परिवार बेटी की मां को ताने देकर जलील करते हैं दुखी मन से बड़ी करते हैं और 7 वर्ष की उम्र में ही बाल विवाह करने लगते हैं इसी दौरान पुलिस पहुंचती है एवं माता-पिता, दादी एवं बाल विवाह कराने वाले पंडित को गिरफ्तार करने आई पुलिस समझाइश देती है कि बाल विवाह कानूनी अपराध है।

## मतगणना में लगे कर्मचारी अच्छे से ले प्रशिक्षण- कलेक्टर

माही की गूंज, मंदसौर।

आगामी 4 जून को लोकसभा निर्वाचन 2024 की मतगणना के कुशलतापूर्वक संपादन के लिए मंगलवार को जिले के कुशाभाऊ ठाकरे सभाकक्ष में मास्टर ट्रेनर डॉ. जे के जैन एवं उनके सहायक टीम द्वारा मतगणना के लिए लगे अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी दिलीप कुमार यादव ने कहा कि प्रशिक्षण अच्छे से प्राप्त करें। प्रशिक्षण में कोई डाउट, समस्या हो तो जरूर पुछे। आयोग द्वारा जारी दिशानिदेर्शों को पालन करें। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत कुमार सत्यम, उप जिला निर्वाचन अधिकारी रविन्द्र परमार, एसडीएम षिवलाल शाक्य एवं मतगणना कर्मी उपस्थित थे।

प्रशिक्षण में डाक मतपत्र की मतगणना किस प्रकार की जाना है, उसकी संपूर्ण प्रक्रिया एवं बारीकियां के बारे में प्रशिक्षार्थियों को अवगत कराया गया। डाक मतपत्र मतगणना संबंध में समीक्षा व विधिमान्य किए जाने वाले मतपत्र के बारे में बताया गया। मास्टर ट्रेनर द्वारा नियंत्रण यूनिट, कंट्रोल यूनिट के मतगणना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुवे उसे खोलना, उस पर लगे नंबरों का मिलान कैसे करना, सिलो की जांच करना व मतगणना संबंधी जानकारी दी गई। मास्टर ट्रेनर द्वारा मतगणना के दौरान किस प्रारूप में आवश्यक प्रतिपूर्ति की जानी है, इस बारे में बताया गया। भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार विहित नियमों का पालन करते हुए मतगणना कार्य संपन्न कराने के लिए सभी आवश्यक बिन्दुओं की विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही मतगणना के संबंध में प्रमुख वैधानिक प्रावधानों, नियमों तथा मतगणना के दौरान कौन-कौन सी जरूरी सावधानी बरती जानी है इसकी जानकारी से मतगणना कर्मियों को अवगत कराया गया।

# एक ऐसा अनोखा मंदिर जहां मामा-भांजे का एक साथ जाना मना है...

माही की गूंज, रतलाम।

रतलाम में रत्तापुरी को प्राचीन शक्तिपीठों की भूमि भी कहा जाता है। जिले में मां भगवती के देव स्थानों का जलवा शहर सहित जिले व प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी सुनाई दे रहा है. शहर में गढ़ कालिका, महिषासुर मर्दिनी से लेकर पेलेस की पद्मावती तक है।

क्षेत्र में राजापुरा माताजी, कंवलका वाली ईटावा माताजी और नामाली क्षेत्र में सैलाना मां कालिका वाली मैवासा माताजी दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। नवरात्रि की सप्तमी, अष्टमी और नवमी पर माता मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ती है। इन मंदिरों की खासियत यह है कि अगर किसी मंदिर में मामा को आने की इजाजत नहीं है तो किसी मंदिर में मां को शराब चढ़ाई जाती है। जिले के इन मंदिरों के बारे में यहां और पढ़ें।

मां कंवलका का मंदिर अपने ऐतिहासिक महत्व के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। माता की प्रतिमा जागृत होने से भक्तों में विशेष आस्था है। मराठा काल में निर्मित इस मंदिर में विराजित माता के दर्शन के लिए पूरे वर्ष भक्तों का आना-जाना लगा रहता है। माता मंदिर के निकट लालबाई मंदिर, महिषासुर मर्दिनी मंदिर, कालिकामाता मंदिर भी दर्शनीय स्थल हैं। माता कंवलका का मंदिर शहर से 28 किमी दूर महू रोड पर बिरमावल के पास सातरुंडा फांटे से तीन किमी पश्चिम में लगभग 600 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित आस्था का स्थान है। इस मंदिर की खासियत यह है कि यहां भक्त नवरात्रि के दौरान प्रसाद के रूप में माता को शराब चढ़ाते हैं।

शहर से सात किलोमीटर दूर ईटावा गांव में बिजासन माता का भव्य मंदिर है, जो प्राचीन ईटावा माताजी के नाम से प्रसिद्ध है। मंदिर में माताजी की दो मूर्तियाँ हैं। माता मंदिर के सामने भेरूजी की प्रतिमा भी अति प्राचीन है। दोनों नवरात्रों में गांव की लड़कियां रोजाना गरबा नृत्य करने आती हैं। मंदिर में कई वर्षों से अखंड ज्योति जल रही है। ऐसा कहा जाता है कि बिजसन माता के मंदिर में संतान की इच्छा रखने वाले जोड़े अक्सर आते हैं। चैत्र नवरात्र में मंदिर में पांच दिवसीय आयोजन एवं भंडारा होता है। जिले सहित अन्य राज्यों से भी श्रद्धालु यहां दर्शन वंदन के लिए आते रहते हैं।

रतलाम से लगभग 35 किमी दूर बाजना मार्ग पर गढ़खंखाई माताजी का मंदिर एक प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर लगभग पांच सौ वर्ष पुराने मंदिर के गर्भगृह में परमारकालीन महाकाली का मंदिर है। नवरात्रि के दौरान सप्तमी, अष्टमी और नवमी पर यहां दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। करण और माही नदियों का संगम होने के कारण यह प्राकृतिक सुंदरता के साथ एक रमणीय स्थान है। मान्यताओं के अनुसार इस मंदिर का निर्माण राजाभोज ने करवाया था। इसका जीर्णोद्धार भी रतलाम नरेश ने करवाया था। इस मंदिर में मामा के साथ आना मना है।

# एक बार फिर सुर्खियों में आती दिखाई दे रही है हाथीपावा की पहाड़ियां

## प्रशासन ने हमेशा ही किया जनसहयोग का दुरूपयोग

माही की गूंज, झाबुआ। मुज्जमील मंसुरी

शहर का एक मात्र अघोषित पर्यटन स्थल हाथीपावा की पहाड़ियां एक बार फिर सुर्खियों में आने की कगार पर दिखाई दे रही है। 2017 के पहले एक दम बंजर दिखने वाली यह पहाड़ियां एक संकल्प के साथ हरियाली की ओर बढ़ने लगी थी। 2016 में झाबुआ में आए एक जुनूनी आईपीएस अधिकारी महेशचंद्र जैन ने इसे एक संकल्प के साथ हरा भरा करने का कदम उठाया था। जैन ने अपने इस संकल्प में शहर की आमजनता तथा सामाजिक संगठनों को भी शामिल कर लिया था। इसके परिणाम भी सार्थक नजर आए और देखते ही देखते बंजर पड़ी हाथीपावा की यह पहाड़ियां एक जंगल का स्वरूप लेती दिखाई दी। आमजन ने भी इसमें खूब बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और संकल्प को आकार देते हुए हजारों की संख्या में यहां पौधा रोपण किया गया। पौधे रोपने के साथ-साथ इनकी देख भाल और लालन-पालन भी होता रहा। जिसका परिणाम एक हरे-भरे जंगल के रूप में सामने आया। यहां जन सहयोग से बच्चों के मनोरंजन के साधन भी बसाए गए। इन पहाड़ियों पर सूर्योदय व सूर्यास्त पाइंट भी बनाए गए। मगर यह सब संभव हो पाया तो आईपीएस महेशचंद्र जैन के कारण। फिर अचानक ही एक दिन आईपीएस महेशचंद्र जैन का तबादला हो गया। जैन के तबादले के बाद धीरे-धीरे स्थितियां बिगड़ने लगी। हालात यह हो गए कि, अब इन पहाड़ियों पर बसे अघोषित पर्यटन स्थल को नुकसान होने लगा। शरारती तत्वों ने जैसे इसे अपने कब्जे में ले लिया। अनैतिक कार्य भी इस जगह होने लगे। पशु-पक्षियों के साथ ही यहां लव बर्ड की तरह अनैतिक कार्यों को अंजाम देने वालों का भी ताता लगने लगा। एक समय तो यह महसूस होने लगा था कि, खुद प्रशासन इसे फिर से बंजर बना देगा। नेताओं के दौरों के दौरान खुद जिला प्रशासन और तत्कालीन कलेक्टर ने सूर्यास्त पाइंट पर लगे बच्चों के झूले-चकरी तुड़वा दिए और मंत्रियों के लिए इस स्थान पर हेलीपेड बना दिए गए। जब इस पर आम जनता और मीडिया ने आपत्ती जताई तो प्रशासन ने सफेद झूठ की तरह यह आश्वासन दिया था कि इस स्थान को पुनः पहले जैसा ही कर दिया जाएगा और तोड़े गए मनोरंजन के साधन फिर से लगा दिए जाएंगे। बच्चों के झूले चकरी की व्यवस्था फिर से कर दी जाएगी, लेकिन वर्षों बीत जाने के बाद भी प्रशासन का यह सफेद झूठ सच साबित ना हो सका। पौधों ने भले ही सात सालों में पेड़ों का रूप ले लिया हो, लेकिन व्यस्थाओं के नाम पर खुद प्रशासन ने ही इसे बर्बादी की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

अब यहां की स्थिति ऐसी हो चली है कि, यहां कोई देखने वाला नहीं है। आए दिन इन हरी-भरी पहाड़ियों में आग लगने की घटनाएं सामने आती रही है। जिससे इन पहाड़ियों और यहां जनसहयोग के लगे पेड़ों को नुकसान पहुंचता ही रहता है। मगर प्रशासन है कि, इसकी रोकथाम के लिए कोई कदम उठाने को तैयार नहीं है। ऐसा लगता है कि, प्रशासन ने हमेशा ही जनसहयोग का दुरूपयोग किया है। हालांकि इन सारी स्थितियों में एक ग्रुप ऐसा था जिसने कभी भी हाथीपावा की इन पहाड़ियों का साथ नहीं छोड़ा। वह था हाथीपावा मोर्निंग क्लब। अपने स्तर पर इस ग्रुप ने बखूबी अपनी जिम्मदारी तो निभाई ही। बल्कि जो काम प्रशासन व उसके नुमाईंदों को करने चाहिए थे वे काम इस मोर्निंग क्लब ने अंजाम दिए। हाथीपावा पहाड़ियों पर जनसहयोग से हुए कामों को गर्त में जाता देख एक बार फिर हाथीपावा मोर्निंग क्लब ने पहल की है। यही वजह है कि, एक बार फिर हाथीपावा की पहाड़ियां सुर्खियों में आती दिखाई दे रही है।

शनिवार को एक बार फिर प्रशासन ने इन पहाड़ियों की सुध लेते हुए एक हाई प्रोफाईल बैठक हाथीपावा पहाड़ियों पर ही आयोजित कर डाली। चूंकि इस बैठक में कलेक्टर खुद हिस्सा ले रही थी तो इंतजाम भी इसी तरह के होने थे। प्रशासनिक अमले ने इस बैठक के लिए व्यवस्थाएं जुटाई और हाथीपावा की पहाड़ियों पर इस बैठक में बैठने के लिए टेबल कुर्सियों का इंतेजाम किया गया। हालांकि यह बैठक सादगी भरे अंदाज में जमीन पर बिछात करके भी की जा सकती थी, लेकिन इस बैठक में अधिकारियों को जो बैठना था सो टेबल कुर्सियों का भी इंतेजाम किया गया। कलेक्टर की यह बैठक सामाजिक संगठनों व अधिकारियों के साथ हुई। हालांकि इसमें आसपास के ग्रामीणों को भी शामिल किया गया।

कलेक्टर की अध्यक्षता में हाथीपावा पहाड़ियों पर की गई बैठक में हाथीपावा पहाड़ियों को और अधिक हराभरा और सुंदर बनाने पर चर्चा की गई। बैठक में बारिश के दौरान सीड बॉल और पौधारोपण के साथ ही पर्यटन क्षेत्र में लगे झूले-चकरी को दुरूस्त करने और पहाड़ी के खाली क्षेत्र में पौधारोपण करने की कार्य योजना बनाई गई। इसके साथ ही हाथीपावा पर्यटन क्षेत्र में सुरक्षा, पानी और विकास कार्यों को लेकर मौजूद लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। पहाड़ियों पर लगी आग के कारण झुलसे पौधों की जगह और अधिक पौधे लगाने के साथ ही पानी की पर्याप्त व्यवस्था और बंद पड़ी पाइपलाइन को सुचारू करने की बात कही गई। यहां हरियाली के साथ अन्य व्यवस्थाओं को दोबारा शुरू करने का प्रयास प्रशासन और सामाजिक संगठनों द्वारा किया जा रहा है। करीब एक घंटा चली प्रशासन और सामाजिक संगठनों की इस बैठक में हाथीपावा पहाड़ियों के लिए कई मुद्दों पर चर्चा हुई।

अब देखने वाली बात यह होगी कि, इस बार प्रशासन किस तरह से हाथीपावा की पहाड़ियों को फिर से बहाल करने में सामाजिक संगठनों की कितनी मदद करता है और इसके कितने सार्थक परिणाम सामने आने वाले है। क्योंकि 2018 के बाद हाथीपावा पहाड़ियों को लेकर प्रशासन व अधिकारियों का रवैया बहुत ही घटिया स्तर का देखने को मिला है। यही वह कारण भी जिसकी वजह से आज हाथीपावा पहाड़ियों को यह दिन देखने पड़ रहे है और प्रशासन को फिर से इसकी ओर ध्यान देने पर मजबूर होना पड़ रहा है। अगर लगातार इसकी देख-रेख हुई होती तो शायद इस तरह की बैठके आयोजित करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके अलावा इन पहाड़ियों पर हुए जनसहयोग के कार्यों का सम्मान भी प्रशासन व उसके नुमाईंदे हमेशा ही नजर अंदाज करते दिखाई दिए है। 2018 के बाद से कई कलेक्टर इस जिले ने देखे मगर किसी ने भी इस ओर कोई पहल नहीं की। इसके अलावा वन विभाग का अमला भी यहां हमेशा सुस्ती करता ही दिखाई दिया है। एसपी महेशचन्द्र जैन के समय रहे वन विभाग के अधिकारी भी यहां से रवाना हो गए और आने वाले नए अधिकारियों ने इन हाथीपावा की पहाड़ियों पर कभी ध्यान ही नहीं दिया। नतीजा यह रहा कि अब फिर एक बार इन पहाड़ियों के अस्तित्व को बचाने की आवश्यकता आन पड़ी है।

जिस तरह से प्रशासन ने हाथीपावा पहाड़ियों पर जाकर हाथीपावा पहाड़ियों के लिए बैठक की है, हम उम्मीद करते है कि, उसी तरह इन हाथीपावा पहाड़ियों को सहेजने का कार्य प्रशासन करेगा। वरना ऐसी बैठकें तो होती ही रहती है, जिसे माथा उतारनी कहा जाता है।

# खाद, बीज व कृषि उपकरणों के नाम पर किसानों के साथ हुई लाखों की ठगी

माही की गूंज, खरगोन। ब्रजभूषण दसौंदी

जिले के ऊन थाना क्षेत्र के खोलगांव में किसानों के साथ फ्रॉड का मामला सामने आया। यहां किसानों को कई चीजों का हवाला देकर उनसे 5 लाख रुपये की ठगी की गई। कृषि उपकरण, जैविक खाद और सोयाबीन कपास की फसल के बीज के नाम पर इन लोगों को अज्ञात लोगों ने ठग लिया।

ठगी करने वालों ने पहले खोलगांव के किसानों को सस्ते में खाद देकर उन्हें प्रलोभन दिया, फिर कृषि उपकरण और जैविक खाद, बीज अनुदान पर दिलाने का किसानों को लालच दिया। इसको लेकर मंगलवार को किसानों ने विरोध प्रदर्शन किया।

### एसपी से की शिकायत

ठगी का शिकार हुए किसान एसपी कार्यालय पहुंचे। एएसपी तरुणेंद्र सिह बघेल से किसानों ने अपनी शिकायत की। किसानों की शिकायत पर एएसपी बघेल ने टीआई को जांच कर प्रकरण दर्ज करने का आदेश दिया। अज्ञात आरोपीयों ने किसानों से कृषि उपकरण, जैविक खाद और बीज के नाम पर अनुदान राशि के लिये ऑनलाईन पेमेंट डलवाकर ठगी की।

किसान और खोलगांव के सरपंच गोपाल सिह भावर ने मीडिया को बताया कि, अज्ञात लोगों ने पहले सस्ती खाद देकर किसानों को प्रलोभन दिया और बाद में करीब एक दर्जन से अधिक किसानों से कृषि उपकरण, जैविक खाद और सोयाबीन बीज के लिये रजिस्ट्रेशन कर अनुदान मिलने का झांसा दिया।

### ऑनलाइन और नकदी, दोनों रूपों से ठगी

अज्ञात आरोपियों ने किसानों से बड़ी ठगी की। किसानों ने ऑनलाइन और नगद राशि देने के प्रमाण सहित एएसपी को शिकायत की। एएसपी तरुणेंद्र सिंह बघेल ने बताया कि, ऊन थाना क्षेत्र के खोलगांव के किसानों के साथ कृषि उपकरण बीज और जैविक खाद के नाम पर ठगी की बात सामने आई है। ऊन थाने के टीआई को प्रकरण दर्ज कर जांच के आदेश दिये गए है। साइबर टीम से भी किसानों के दिये मोबाइल नंबरों की जांच कराई जा रही है।

# तीन वर्ष में बनकर तैयार होगा नर्मदा पर तीसरा बड़ा पुल

माही की गूंज, बड़वानी।

जिले से गुजर रही प्रदेश की जीवनदायिनी मां नर्मदा नदी पर अब तीसरा पुल बनाने की कवायद शुरू हो गई है। राजघाट के बाद छोटी कसरावद पर बड़ा पुल बनने के बाद अब जिले के अंजड़ के ग्राम छोटा बड़दा से धार जिले के ग्राम सेमल्दा को जोड़ने के लिए नर्मदा नदी पर तीसरा बड़ा पुल बनेगा। यहां पर ब्रिज बनाने के लिए नर्मदा नदी पर निर्माण संबंधी तकनीकी जांच का कार्य शुरू हो चुका। उच्च स्तरीय ब्रिज का काम तीन वर्ष में पूरा होगा।

उक्त पुल लोक निर्माण विभाग द्वारा 68 करोड़ 3 लाख रूपये की लागत से तैयार किया जाएगा। इस पुल के निर्माण से जिले की अंजड़, ठीकरी, राजपुर, बड़वानी ओर सेंधवा तहसील के लोग सीधे धार जिले के मध्य क्षेत्र मनावर धरमपुरी ओर बाकानेर क्षेत्र से सीधे जुड़ जाएंगे। पुल निर्माण कार्य की प्रक्रिया शुरू होते ही क्षेत्र के लोगों में खुशी की लहर है।

गौरतलब है कि, मप्र लोक निर्माण विभाग के सेतु विभाग द्वारा गत वर्ष 21 अगस्त को बड़वानी को धार जिले से जोड़ने के लिए मनावर सेमल्दा मार्ग से नर्मदा नदी पर एक उच्च स्तरीय पुल बनाने के लिए निविदा आमंत्रित की गई थी। पुल निर्माण के लिए कंपनी जेसीबी से खुदाई कर जमीन तैयार कर प्लांट आदि लगाने का काम शुरू हो गया है। वहीं मशीनरी व सामग्री भी आने का क्रम जारी है। यहां 750 मीटर लंबे और 12 मीटर चौड़े टू-लेन ब्रिज का निर्माण होगा। यह अंजड़ तहसील के छोटा-बड़दा से धार जिले की मनावर तहसील के ग्राम सेमल्दा को सीधा जोड़ेगा।

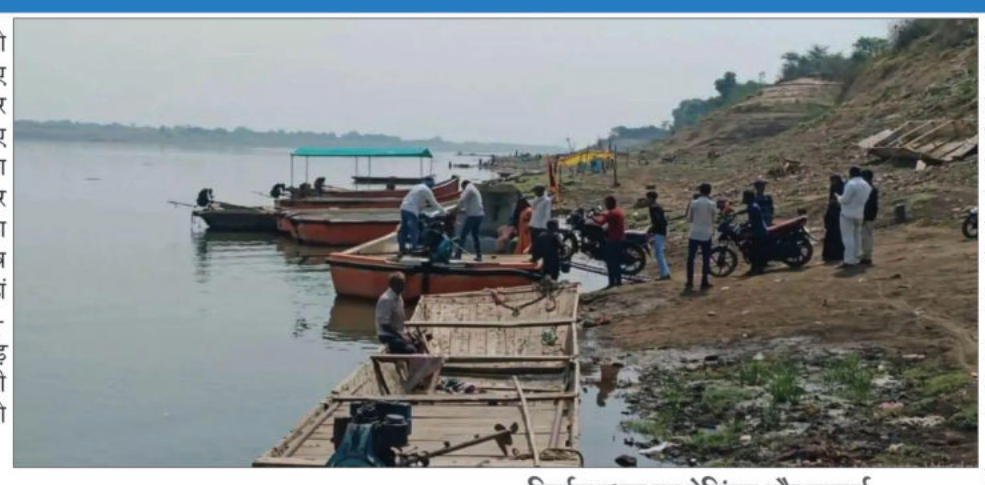

### लंबे समय से की जा रही थी मांग, घटेगी दूरी

नर्मदा नदी पर उक्त ब्रिज के लिए लंबे समय से ग्रामीणों द्वारा मांग की जा रही थी। पुल के अभाव में क्षेत्र के लोगों को मनावर धरमपुरी ओर बाकानेर जाने के लिए 60 किमी अतिरिक्त दूरी तय करना पड़ती है, जो अब पुल बनने के बाद घटकर महज 20 किमी ही रह जाएगी।

### निर्माण स्थल का टेसि्टंग और गहराई नापने का कार्य जारी

प्रोजेक्ट मैनेजर रजनीकांत श्रीवास्तव ने बताया कि, नर्मदा नदी पर 750 मीटर लंबा व 12 मीटर चौड़ा पुल निर्माण किया जाएगा। जिसका ठेका तकरीबन 68 करोड़ 3 लाख रूपये में हुआ है। वर्तमान में पुल निर्माण वाले स्थान पर टेसि्टंग कार्य व नदी में पानी गहराई नपा ने का कार्य किया जा रहा है। अभी कंपनी यहां कर्मचारियों के रहने, मशीन व सामग्री की व्यवस्था की जा रही है। पुल निर्माण का कार्य करीब तीन वर्ष में किया जाएगा।

### बैकवाटर की वर्तमान स्थिति को देखते हुए पुल की ऊंचाई होगी निर्धारित

प्रोजेक्ट मैनेजर श्रीवास्तव के अनुसार उक्त पुल की ऊंचाई बैकवाटर की वर्तमान स्थिति को देखते हुए निर्धारित की जाएगी। वैसे पुल की ऊंचाई लगभग 20 मीटर रहेगी। ज्ञात रहे कि नर्मदा नदी पर क्रूज चलाने की तैयारी भी की जा रही है। पुल निर्माण में इन तमाम बिंदुओं को ध्यान में रखा जाएगा। ज्ञात रहे कि नर्मदा नदी पर बना राजघाट का पुराना पुल डूब में जाने से किसी काम का नहीं रहा। वहीं छोटी कसरावद के नए पुल से वर्तमान में आवागमन हो रहा है।

### चार तहसीलों के लाखों लोगों को मिलेगा लाभ

वर्तमान में इस हिस्से में दोनों जिलों के लगभग 60 से अधिक छोटे बडे गांवों के लोग नर्मदा नदी में चलने वाली नाव और मोटर बोट से जान जोखिम में डालकर आना-जाना करते हैं। ब्रिज बनने के बाद सड़क रास्ते से आवागमन सुगम हो जाएगा। आपको बता दें कि धार जिले की ओर 16 किमी का मार्ग पहले ही सीमेंटकरण हो चुका है। उच्च स्तरीय पुल बनने से लगभग 40 किमी तक का अतिरिक्त चक्कर वाहनों को नहीं काटना पड़ेगा, जिससे समय और ईंधन की भी बचत होगी। वहीं चार पहिया वाहन सीधे कुछ ही समय में बड़वानी जिला मुख्यालय सहित अंजड़ राजपुर व अन्य क्षेत्रों से मनावर क्षेत्र में पहुंच सकते हैं।

## भाई ने बहन की हत्या कर शव फेंक दिया कुएं में

**माही की गूंज, खरगोन।** जिले में दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। छोटे भाई ने मानसिक रोगी बड़ी बहन के गले पर पैर रखकर जान ले ली।आरोपी भाई ने कहा मानसिक रोगी बहन का उपचार करा-कराकर थक गया था। हत्या के बाद बहन का शव सीमेंट के खंभे सहित तारों से बांधकर कुएं में फेंका कर दिया था। आरोपी भाई ने पहले बहन को खाट के नीचे पटका और फिर गले पर लात रखकर तड़पा-तड़पाकर मार डाला। बहन की लाश को आधा किमी दूर वन विभाग के कुएं के पास लेकर पहुंचा।

उसको डर था कि अगर वह बहन की लाश को कुएं में फेंक देता है। तो वह पानी में ऊपर आ सकती है और उसका भांडा फूट सकता है। इसलिए उसने पहले लाश पर प्लांटेशन का सीमेंट का पोल बांधा और फिर मुंह बांध कुएं में फेंक दिया।

जल्लाद भाई ने इससे पहले बहन की साड़ी को उसी जंगल में बने एक छोटे से तालाब के बेस्ट वेयर की नली में जला दिया था। हैरानी की बात यह है कि जब पुलिस को शव मिला तो आरोपी ने बहन को पहचानने से ही इनकार कर दिया। उसने पैर और चेहरे पर निशान का हवाला देते हुए बहन की लाश को नहीं पहचानने का बहाना किया। लेकिन उसके हाथ पर गुदे छोटे भाई के नाम की वजह से पुलिस के लिए लाश की शिनाख्त करना आसान हो गया। जैसे ही आरोपी ने देखा कि उसका भांडा फूटने वाला है, वह बुरी तरह से कांपने लगा। बस उसी दौरान पुलिस को उस पर शक हो गया। सख्ती से पूछताछ करने पर उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। पुलिस ने आरोपी की निशान देही पर टूटे हुए खंभे और जली साड़ी को भी बरामद कर लिया है।

हैरान कर देने वाली यह वारदात खरगोन के लवाड़ा थाना क्षेत्र के ग्राम चैनपुरा की है। दो मई को दादू पिता भागीया नाम के एक छोटे भाई ने अपनी मानसिक रोगी बड़ी बहन जहांबाई की बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया। दरअसल 15 साल पहले पति द्वारा छोड़ने के बाद से वह मायके में रह रही थी। उसका परिवार शादी में गया था। महिला घर पर भाई के साथ अकेली थी।

जहांबाई एकदम से अभद्र हरकद करने लगी। जिस पर शराब के नशे में धुत उसके भाई को गुस्सा आ गया। उसने पहले तो उसे थप्पड़ मारकर भगा दिया। वह फिर भी नहीं मानी तो छोटे भाई ने खाट के नीचे पटककर बहन के गले तो पैर से मसलकर मार डाला, ये जानकारी बलवाड़ा थाना प्रभारी सीएल कटारे ने दी। थोड़ी देर बाद जैसे ही उसे थोड़ा होश आया उसने बहन को पानी पिलाने का प्रयास किया। लेकिन वह नहीं उठी। जिसके बाद भाई को डर था कि कहीं हत्या का राज खुल न जाए। इसी वजह से उसने हत्या को आत्महत्या दिखाने के प्रयास में पूरी प्लानिंग के साथ उसके शव को कुएं में फेंक दिया। हालांकि पुलिस ने इस गुत्थी को सुलझाते हुए आरोपी को सोमवार को धर दबोचा। बड़वाह न्यायालय में उसे पेश कर उसे जेल भेज दिया गया है।

# 46 डिग्री के ऊपर पहुंचा पारा, ट्रांसफारमर के लिए लगाने पड़े कूलर

माही की गूंज, बड़वानी।

भीषण गर्मी में निमाड़ का बड़वानी भट्टी की तरह तप रहा है। दोपहर के समय आसमान से आग बरस रही है वहीं सूरज के तीखे तेवर के चलते लोग घरों में कैद होने को मजबूर है।बाजार में सन्नाटा पसरने लगा है।

ऐसी गर्मी में इंसान तो क्या अब उपकरणों को भी बचाने की कवायद की जा रही है। विद्युत वितरण कंपनी द्वारा भी ग्रिड पर ट्रांसफार्मर और अन्य बड़े उपकरणों को कूलर की हवा से ठंडक देकर उपकरणों के तापमान को संतुलित रखा जा रहा है। इन्हें सुरक्षित रखने की कवायद की जा रही है।

दरअसल, समस्या ही समाधान की जननी है। आपको ऐसे-ऐसे कारनामे, नजारे और प्रयोग देखने को मिलेंगे जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। यह हम इसलिए कह रहे हैं क्योंकि मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी अंजड़ द्वारा इंसानों की बजाए ट्रांसफार्मरों को कूलर की ठंडी हवा खिलाई जा रही है।

बिजली विभाग ऐसा इसलिए कर रहा है ताकि ट्रांसफार्मर ठंडे रहें और विद्युत प्रदाय भी बाधित न हो। जिले सहित क्षेत्र में भीषण गर्मा का दौर जारी है। दिन में तापमान 46 डिग्री के ऊपर पहुंच चुका है। गर्मी से बचाव के लिए लोग कूलर और एसी का सहारा ले रहे हैं।

गर्मी और ओवरलोडिंग से हिट हो रहे ट्रांसफार्मर

बड़वानी में विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों के अनुसार गर्मी और ओवरलोडिंग के चलते ट्रांसफार्मर हीट हो रहे हैं। तापमान बढ़ने के कारण अंजड़ के बड़वानी रोड स्थित मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी मुख्य ग्रिड से शहर की बिजली प्रभावित हो रही। जिसको देखते हुए स्टेशन पर बिजली विभाग के अधिकारियों ने अनोखा प्रयोग किया है। विभाग ने ट्रांसफार्मरों को ठंडा रखने के लिए कूलर लगाए हैं। अधिकारियों का मानना है कि ट्रांसफार्मर्स को ठंडा रखा जाए तो फाल्ट की समस्या खत्म होती है।

### 45 डिग्री से उपर पारा पहुंचते ही सब स्टेशन पर लगाए जाते हैं कूलर

आपको बता दें कि, बिजली विभाग द्वारा इस तरह का प्रयोग पिछले दो वर्ष से किया जा रहा है। जब भी तापमान 45 डिग्री से उपर पहुंचता है तब कूलर लगा दिए जाते हैं। सोमवार से कूलर लगाए गए हैं। वर्तमान में कपास की फसल लगाई गई है और किसानों के खेत में पानी देने का काम भी चल रहा है। इस कारण सभी जगह बिजली का लोड बड़ा हुआ है। उपभोक्ताओं के घरों में पंखे, कूलर, एसी 24 घंटे चलाने पड़ रहे हैं। मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी अंजड़ से प्राप्त जानकारी के अनुसार फिलहाल बिजली यूनिट की काफी डिमांड चल रही है। लगभग 16 लाख यूनिट प्रतिमाह और तकरीबन 60 हजार यूनिट प्रतिदिन की खपत अंजड़ शहरी क्षेत्र में बिजली की हो रही है।

इधर गर्मी से निजात पाने नर्मदा तटों पर पहुंच रहे लोग

दोपहर के समय पड़ने वाली भीषण गर्मी से निजात पाने के लिए लोग जहां दोपहर में घरों में कैद रहने को मजबूर हैं। वहीं शाम को ठंडक व घूमने के लिए बगीचों व नदी तटों पर पहुंच रहे हैं। नर्मदा नदी के तटों पर सुबह शाम लोगों का तांता लग रहा है। राजघाट नर्मदा तट पर शाम के समय गर्मी से निजात पाने एवं नर्मदा स्नान व जलक्रीड़ा के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं।

# 1200 रुपए दाम और नाम नूरजहां आम, जिले में बचे मात्र 10 पेड़

माही की गूंज, अलीराजपुर।

**जिले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र के दुर्लभ 'नूरजहां' आम के गिने-चुने पेड़ बचे हैं। इससे चिंतित अधिकारी अब आम की इस खास प्रजाति को आने वाली पीढ़ियों के वास्ते बचाने के लिए इसके पेड़ों की तादाद बढ़ाने के वैज्ञानिक प्रयास करने में जुट गए हैं।अफगान मूल की मानी जाने वाली नूरजहां आम की किस्म अपने बड़े आकार के लिए जानी जाती है, जिसका वजन 3.5 किलोग्राम से 4.5 किलोग्राम के बीच होता है। साथ ही बाजार में कीमत 1000 रुपये से लेकर 1200 रुपये प्रति किलो तक होती है।**

इंदौर संभाग के आयुक्त (राजस्व) दीपक सिंह ने यहां बागवानी विभाग की एक बैठक के दौरान कहा, अलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में नूरजहां के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक प्रयास तेज किए जाने चाहिए। उन्होंने अलीराजपुर जिले में आम के पेड़ों की घटती संख्या पर चिंता व्यक्त करते हुए वन विभाग को टिश्यू कल्चर की मदद से नूरजहां के नये पौधे तैयार करने के निर्देश दिए।

अलीराजपुर कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. आरके यादव ने बताया, नूरजहां आम के केवल 10 फल देने वाले पेड़ बचे हैं। हमने हार नहीं मानी है। हम अगले पांच वर्षों में पौधारोपण कर इनकी संख्या 200 तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। हम इस प्रजाति को विलुप्त नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा कि, कुछ दशक पहले नूरजहां आम का अधिकतम वजन 4.5 किलोग्राम तक होता था, जो अब घटकर 3.5 से 3.8 किलोग्राम के बीच रह गया है।

नूरजहां के तीन पेड़ों के मालिक और आम उत्पादक शिवराज सिंह जाधव ने बताया, इस बार पैदावार कम है। मेरे तीन पेड़ों से केवल 20 आम निकले। बेमौसम बारिश और तूफान से पैदावार पर बुरा असर पड़ा है। उन्होंने कहा कि, उनके बगीचे में पिछले साल सबसे भारी 3.8 किलोग्राम की नूरजहां पैदा हुए थे, जिससे उन्हें 2 हजार रुपए मिले थे। किसान जाधव ने कहा, नूरजहां किस्म के पेड़ जनवरी में बौर आने शुरू हो जाते हैं और आम जून में पकने के बाद आम बाजार में बिक्री के लिए आते हैं।

## रेलवे में नोकरी के नाम पर चार युवाओं के साथ हुई ठगी

माही की गूंज, जोबट।

रेलवे में नौकरी दिलाने के नाम पर जिले के जोबट के चार युवाओं से लाखों रुपए की ठगी का मामला सामने आया है। शिकायत पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि धोखेबाजों का गिरोह युवाओं को शिकार बना रहा है।

मामले में अज्ञात आरोपितों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है। इस पूरी जालसाजी में पश्चिम बंगाल सहित हरियाणा और भोपाल के लोगों के शामिल होने की जानकारी मिली है।

जोबट निवासी सरिता पारगी रेलवे में स्टाफ नर्स बनना चाहती थी। इसी के चलते उसने अपनी एक रिश्तेदार से इस बारे में चर्चा की, जो रेलवे अस्पताल में स्टाफ नर्स है। उसने सरिता को रेलवे में नौकरी लगाने की बात कही थी। सरिता ने महिला के कहने पर अलग-अलग बैंक खातों में करीब साढ़े सात लाख रुपए जमा करा दिए।

बाद में गिरोह के सदस्यों ने नियुक्ति पत्र तक मेल कर दिया। नौकरी लगाने के नाम पर जालसाजी का पता तब चला, जब सरिता अपना नियुक्ति पत्र लेकर भोपाल के कमलापति स्टेशन पहुंची। भोपाल में अपने दस्तावेज दिखाने के बाद सरिता को पता चला कि उसके साथ ठगी हुई है। इसी प्रकार तीन और युवाओं को भी ठगा गया है।

मामले में जोबट थाना प्रभारी सोनू सितोले ने बताया कि, ऐसे चार प्रकरण सामने आए हैं, जिनमें नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी कर ली गई। सभी मामलों की जांच कर रहे हैं। गौरतलब है कि आदिवासी इलाकों में बेरोजगार युवाओं को ठगी का शिकार बनाने के लिए कई गिरोह सक्रिय हैं, जो अलग-अलग माध्यमों से युवाओं को अपना शिकार बनाते हैं।

# प्रधानमंत्री सड़क मार्ग की हालात बद से बदतर, सुध लेने वाला कोई नहीं

माही की गूंज, बरझर।
फिरोज खान

बरझर से बड़गांव छोटी पोल प्रधानमंत्री सड़क मार्ग की हालात बद से बदतर है। सात वर्ष पहले बनी सड़क की सूद न तो सम्बंधित ठेकेदार ले रहा है न ही विभागीय अधिकारी इस सड़क की सूद ले रहे हैं। बरझर से छोटी पोल प्रधानमंत्री सड़क मार्ग आजाद नगर भाबरा जाने के लिए कम दूरी और कम समय में तय की जा सकती है। परन्तु इस सड़क की हालात खस्ता होने के चलते बरझर क्षेत्र के वाहन चालक खुटाजा-मालपुर होकर भाबरा जाना उचित समझते हैं। जबकि दूरी ज्यादा होने के बाद भी वाहन चालक इसी सड़क मार्ग से जाना आना ज्यादा करते हैं। जबकि बरझर से भाबरा व्यापार की दृष्टि से वाहनों का आना-जाना चलता रहता है। कम दूरी ओर कम समय के बरझर, बड़गांव, छोटापोल सड़क मार्ग में 12 तो स्पिड ब्रेकर बने हैं। हर सरकारी संस्था के सामने बड़े-बड़े गतिरोध बने हैं। स्कूल, पशु-चिकित्सक अस्पताल, आंगनवाड़ी, उचित मूल्य की दूकान, ग्राम पंचायत, पंचायत मेम्बर, ग्राम सरपंच, माता मंदिर पर स्पीड ब्रेकर बने हुए है। साथ ही जहां सड़क मार्ग पर मकान हो उसके ठीक सामने मिट्टी के गतिरोध बना दिए गए हैं। साथ ही सड़क मार्ग से खेत में पानी के लिए जगह-जगह सड़क मार्ग को खोद दिया गई है जिससे गतिरोध जेसे बन गये है। इस तरह पूरे बरझर-छोटी पोल सड़क मार्ग की 14 किलोमीटर की सड़क में 22 ऐसी जगह है जहा अचानक टेंपर स्पिड ब्रेकर आ जाते हैं। जिससे वाहन चालकों को हादसे का अंदेशा बना रहता है।

बरझर-छोटीपोल सड़क मार्ग के निर्माण हुए 7 वर्ष से अधिक गुजरने को आये परन्तु इस सड़क मार्ग की इतनी दयनीय स्थिति हो गई है की सड़क मार्ग की गिट्टी बाहर आने लगी है। साथ ही साइट पट्टी की गिट्टी भी उखड़ पढ़ी है। जबकि प्रधानमंत्री सड़क मार्ग को 5 वर्ष में डामरीकरण करने किया जाना चाहिए परन्तु सड़क मार्ग बने 7 वर्ष हो चूकें सड़क मार्ग पर नवीनीकरण किया जाना चाहिए परन्तु सड़क पर पेचवर्क करना सम्बोधित विभाग उचित नहीं समझ रहा। सड़क मार्ग की साईट पट्टीयों पर झाड़ियां अतिक्रमण भी देखा जा सकता है। वाहन चालक जान जोखिम में डालकर वाहन चलाने को मजबुर है। साथ ही बरझर कस्बे से प्रारम्भ कि 300 मीटर सड़क मार्ग सीसी रोड से बना है जहां सड़क जमीन लेवल से बनी होने से बरसात का पानी आधा आधा फूट भर जाता है जिससे रहवासी भी खाशे परेशान रहते है। आठ इंच सीसी सड़क मार्ग पूर्ण बनाने की मांग जनप्रतिनिधियों से भी कर चूकें है, परन्तु ग्रामीणों की मांग पर न ही विभागीय अधिकारियों का न ही जनप्रतिनिधियों का ध्यान जा रहा है। जिसके चलते ग्रामीणों सहित वाहन चालक खासे परेशान हैं। समय रहते इस सड़क मार्ग की सुद सम्बंधित विभाग ने नहीं ली तो बड़ा हादसे का अंदेशा हमेशा बना रहेगा।

# बिजली तार चोर गिरोह पुलिस की गिरफ्त में

**माही की गूंज, उज्जैन।** जिले में ग्रामीण क्षेत्रों से बिजली के तार चुराने वाले गिरोह के पांच सदस्यों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरोह से दो क्विंटल से अधिक तार बरामद किया है। गिरोह में दो नाबालिग सदस्य और खरीददार भी शामिल हैं। पुलिस ने सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया। दो मुख्य आरोपियों को रिमांड पर भेजा गया है।

चिंतामण थाना क्षेत्र में पिछले दिनों बदमाशों ने ग्रामीण क्षेत्रों से दो क्विंटल से अधिक बिजली के तार चोरी कर लिए थे। कुछ तार पोल से काटे थे, कुछ संधारण के लिए रखे थे। मामले में बिजली विभाग के अधिकारियों ने पुलिस को शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू की। सोमवार रात सांवेर के रहने वाले अर्जुन बागरी, माखन बागरी के साथ दो नाबालिग और इंदौर के मुकेश को हिरासत में लिया गया। उनसे पूछताछ के बाद तार चोरी का खुलासा हो गया। पुलिस ने बदमाशों की निशानदेही पर दो क्विंटल से अधिक तार बरामद किया है। वारदात में एक लोडिंग वाहन भी जब्त किया गया है। थाना प्रभारी बल्लू मंडलोई ने बताया कि सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया था। चोरी के तार खरीदने वाले मुकेश को जमानत पर रिहा कर दिया गया। नाबालिगों को बाल संप्रेक्षण गृह भेजा गया। अर्जुन बागरी और माखन बागरी को तीन दिन की रिमांड पर लिया है।

## महाविद्यालय में रासेयो सी प्रमाण पत्र परीक्षा संपन्न

माही की गूंज, चं.शे. आजाद नगर।

शासकीय महाविद्यालय चंद्रशेखर आज़ाद नगर में राष्ट्रीय सेवा योजना के सी प्रमाण पत्र के लिए परीक्षा संपन्न हुई। जिसके अंतर्गत अग्रणी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अल्पना बरिया द्वारा गठित जिला स्तरीय समिति ने स्वयं सेवकों के परियोजना कार्य का मूल्यांकन व साक्षात्कार लिया गया। जिला स्तरीय समिति में रासेयो जिला संगठक, प्रो. सुरेश तोमर, प्रो. कमलेश गणावा कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. शुभम चौहान, प्रो. संदीप बामनिया उपस्थित रहे। मूल्यांकन के पश्चात समिति ने शासकीय महाविद्यालय भाबरा के 3 स्वयंसेवकों कु. टीना कोचरा पिता प्रतापसिंह, मुकेश जमरा पिता जगनसिंह, जितेंद्र चौहान पिता रमेश के नामों की अनुशंसा की। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एसएस डोडवे व महाविद्यालयीन स्टाफ ने तीनों विद्यार्थियों को बधाई और शुभकामनाएं दी।

## तेंदुए के हमले से 4 ग्रामीण घायल 1 गंभीर घायल को किया रेफर

माही की गूंज, अमझेरा। विक्रमसिंह राठौर

अमझेरा क्षेत्र के भेरूघाट में ग्राम हाथीपावा में बुधवार को घर की बागड़ लगाने का काम कर कर ग्रामिणों को तेंदुए ने हमला कर बुरी तरह से घायल कर दिया, जिन्हे इलाज के लिए अमझेरा के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लाया गया। जहाँ डॉ. सुशांतसिंह बहादुर के द्वारा सभी घायलो नानुराम पिता दरियाव निवासी बड़खोदरा, कालु पिता मोहन निवासी बड़खोदरा, गजेन्द्र पिता अनसिंह निवासी ग्राम हाथीपावा एवं मुनसिंह पिता तोलिया निवासी हाथीपावा का इलाज किया तथा एक गंभीर घायल नानुराम को धार रेफर किया। गौरतलब है कि, इस क्षेत्र में तेंदुए की हलचल रहती है तथा बिते वर्षों में यहाँ तेंदुए के द्वारा हमले की घटनाएं हो चुकी है जिससे ग्रामीणों में भय का माहोल है।

## विधायक क्षेत्र में बाईक चोरी एवं अवैध शराब विक्रय को लेकर एसपी को सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जोबट विधायक सेना महेश पटेल ने विधानसभा क्षेत्र में लगातार हो रही मोटर साईकिल चोरी ओर अवैध रूप से विक्रय हो रही शराब मामले को लेकर एसपी राजेश व्यास से चर्चा कर ज्ञापन सौंपकर उचित कार्यवाही की मांग की है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि, उक्त मामले में कार्रवाई नहीं की गईं तो कार्यकर्ता एवं ग्रामीणों के साथ धरना-प्रदर्शन पर बैठेगी।

### पुलिस की उदासीनता से अपराधियों के हौसले बुलंद

ज्ञापन में विधायक सेना पटेल ने बताया कि, मेरी विधानसभा क्षैत्र जोबट शहर अन्तर्गत निरन्तर बाईक चोरी की घटनाएं बढ गई है, अभी तक अनैक बाईक चोरी हो चुकी है, चोरो के हौसले बुलंद है चोरी की वारदातों से क्षैत्र की जनता काफी परेशान है। पुलिस पुरी तरह से निरंकुश है, अपराधियों की धरपकड में कोई रूची नही ले रही है। विधायक ने बताया कि, इसके अलावा जोबट, उदयगढ, भाभरा, आम्बुआ, कठ्ठीवाडा क्षैत्र में अवैध शराब का विक्रय धडल्ले से हो रहा है। सरकारी देशी-विदेशी शराब की दुकाने नियम के विरूद्ध संचालित हो रही है, सुबह जल्दी खुलकर देर रात 12 बजे तक खुली रहती है, एवं मनमाने उंचे दामों में शराब ब्रिकी की जा रही है। साथ ही छोट-बडे वाहनों से अवैध परिवहन किया जा रहा है। इसके अलावा जगह-जगह गली-मोहल्ले में अवैध शराब का विक्रय हो रहा है, जिससे क्षैत्र के लोगो में रोष है। विधायक पटेल ने एसपी से अनुरोध करते हुए कहा कि, मेरे विधानसभा क्षैत्र से ऐसी चोरी की वारदातों एवं अवैध शराब के विक्रय एवं परिवहन परा रोक लगाने का कष्ट करे। अगर इस दिशा में कोई प्रभावी कार्यवाही नही हुई तो में अपने कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणजनों के धरना एवं विरोध प्रर्दशन करूंगी।

# भीषण गर्मी में भगवान भी परेशान मंदिर में लगाए गए एसी

माही की गूंज, उज्जैन।

मध्य प्रदेश के लोग इन दिनों गर्मी के भीषण मार झेल रहे हैं। प्रदेश में पारा 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच चुका है। वहीं धर्मनगरी उज्जैन में भी गर्मी चरम पर है। यहां पारा 44 डिग्री सेल्सियस पहुंचने से लोग गर्मी से बेहाल हो गए हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि भगवान भी गर्मी से बेहाल हो रहे होंगे, इसलिए इस्कान मंदिर में भगवान राधा कृष्ण को ठंडक पहुंचाने के लिए एसी लगाया गया है। साथ ही चन्दन के लेप लगाकर गर्मी से राहत दी जा रही है।

### एसी और चंदन के लेप से भगवान को दिया जाएगा ठंडक

देश भर के मैदानी इलाकों में भीषण गर्मी के चलते दिन में घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। लोग गर्मी से बचने के लिए तरह तरह के जतन कर रहे हैं। वहीं इस्कॉन मंदिर में भी भीषण गर्मी के प्रकोप से भगवान श्री कृष्ण, बलराम, सुदामा, राधा सहित अन्य देवी-देवताओं को बचाने के लिए और शीतलता प्रदान करने के लिए खास इंतजाम किए गए हैं। इस्कॉन मंदिर में भगवान के गर्भगृह को ठंडा रखने के लिए तीन एसी लगाए गए हैं। साथ ही भगवान को ठंडक देने के लिए चन्दन का भी लेप लगाया जाएगा।

इस्कॉन मंदिर के पंडित राघव दास ने कहा कि, जिस तरह आम इंसान को गर्मी और ठंड लगती है, उसी तरह भगवान को भी इन महीनों में ख़ासा ध्यान रखा जाता है। ठंड में भगवान को ऊनी वस्त्र पहनाते हैं और अधिक गर्मी पड़ने के चलने एसी लगाए गए हैं।

### 21 दिनों तक इस्कॉन मंदिर में भगवान को लगाया जाएगा चन्दन

उन्होंने आगे कहा कि, अक्षय तृतीया से 21 दिन पहले मान्यतानुसार माधवेन्द्र पूरी को वृंदावन में भगवान गोपाल ने दर्शन देकर कहा था कि बहुत गर्मी है चन्दन लाकर लगाओ। जब वापस आये तो उस दिन अक्षय तृतीया थी। उस समय वो उड़ीसा में थे। भगवान ने कहा था कि, आप गोपी नाथ जी को चन्दन लगा दो उनसे शीतलता ले लूंगा। इसलिए वैष्णव मंदिरों में चन्दन यात्रा होती है और भगवान के विग्रहो को चन्दन से लेपित करते हैं, ताकि शीतलता प्रदान हो। इसलिए आगामी 21 दिनों तक इस्कॉन मंदिर में भी इसी तरह से चन्दन लगाया जाएगा।

पंडित राघव दास ने कहा कि, भगवान को ठंडक प्रदान करने के लिए रोजाना चार लोग चंदन का लेप तैयार कर रहे हैं। करीब 20 किलो चन्दन को एकत्रित कर भगवान को लगाया जाएगा।

### 11 मटकियों से बाबा महाकाल को पहुंचाए जा रहे ठंडक

विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में भगवान को शीतलता प्रदान करने के लिए इसी तरह से जतन गर्मी में किया जाता है। दरअसल, यहां भगवान को ठंडक देने के लिए 11 कलश बांधे गए हैं। महेश पुजारी ने बताया कि, वैशाख कृष्ण प्रतिपदा 24 अप्रैल से मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग पर मिट्टी के 11 कलश बांधे गए हैं, जिनसे जल प्रवाह कर भगवान को शीतलता प्रदान की जा रही है।

वहीं सांदीपनि आश्रम के पुजारी रूपम व्यास ने बताया कि, भगवान श्री कृष्ण, बलराम, सुदामा और गुरु सांदीपनि को शीलतता प्रदान करने के लिए दही, छांछ, श्रीखंड, तरबूज, आम सहित पेय पदार्थों का भोग लगाया जा रहा है। साथ ही भगवान को रोजाना चन्दन का लेप लगाकर शीतलता प्रदान की जा रही है।

### चार दिनों से पारा 44 डिग्री सेल्सियस के पार

उज्जैन में इस बार गर्मी के मौसम में नवतपा शुरू होने से पहले ही सूरज ने रौद्र रूप दिखा दिया है। रविवार, सोमवार, मंगलवार और बुधवार को यहां पारा 44 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। अधिक तापमान ने जनजीवन अस्त व्यस्त कर दिया है। दोपहर के समय में सड़कों पर भी भीड़ दिखाई नहीं दे रही है। लगभग दस दिनों में धर्मनगरी का पारा 42 डिग्री से लेकर 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। वहीं प्रशासन ने लू से बचने के लिए एडवाइजरी जारी की है।

### लगातार बढ़ रहा तापमान

18 मई को अधिकतम तापमान 42.6 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 25.5 डिग्री सेल्सियस रहा। 19 मई को अधिकतम तापमान ने 44.0 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। 20 मई को अधिकतम तापमान 44.0 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28.2 डिग्री सेल्सियस रहा। 21 मई को 0.2 डिग्री सेल्सियस के बढ़ोतरी के साथ अधिकतम तापमान 44.2 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

# उपचार कर गर्भपात करवाने के आरोप के साथ सामने आया फर्जी आधार कार्ड का मामला

## पिता का तंज झेल रहे लाला के क्लीनिक पर पहुंची जांच टीम, बौखलाया परिवार अधिकारियों के सामने शिकायतकर्ता के साथ की मारपीट व दी धमकी

## कांच के मकान में रहकर दूसरे के मकान में पत्थर मार अपने मकान को ढहाने वाली कहावत चरितार्थ हो रही लाल यादव के साथ

माही की गूंज, बामनिया।
गौरव भंडारी

**जिले में फर्जी क्लिनिको व फर्जी डॉक्टरों की भरमार है और यह फर्जी डॉक्टर लोगों की जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। वहीं बड़े स्तर पर कहीं न कहीं प्रतिदिन गर्भपात भी करवा रहे है। तय है यह सारा खेल अवैध क्लिनिको पर खुलेआम हो रहा है जो स्थानीय जिले की प्रशासनिक अधिकारियों से साठ-गांठ के चलते ही हो रहा है। अगर प्रशासन से साठ-गांठ नहीं होती तो यह फर्जी डॉक्टर अवैध क्लिनिक खोलना तो क्या चलते-फिरते भी यह फर्जी इलाज नहीं कर सकते हैं।**

बामनिया में एक मामला ऐसा सुर्खियों में चल रहा है, जिसे दिलचस्प कहे या शर्मसार...? यह तय ग्रामवासी नहीं कर पा रहे हैं।

ग्राम बामनिया में वैसे तो कई फर्जी क्लीनिक खोल फर्जी डॉक्टर उपचार कर रहे हैं। लेकिन वर्तमान में भुवनेश्वर पिता भागीरथ यादव जिसे लाला के नाम से क्षेत्र में जाना जाता है। कंपाउंडर ओमप्रकाश भट्ट जिनके उपचार से क्षेत्र व आसपास के लोग पूर्णतः संतुष्ट है भुवनेश्वर उर्फ लाला ने भी अपने अन्य साथियों के साथ उक्त डॉक्टरों के पास डॉक्टरी का सामान्य ज्ञान प्राप्त करते हुए प्रेक्टिस कर डॉक्टरी उपचार का ज्ञान प्राप्त किया। कुछ साल से लाला ने अपना क्लीनिक खोल लोगों का इलाज कर रहा है। लाला का उक्त क्लीनिक व उसकी डिग्री वेध है या अवैध यह प्रशासनिक जांच व कार्रवाई का हिस्सा है और प्रशासन को अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। वही लाला के पिता भागीरथ यादव जो की जनजाति वर्ग में आते हैं। भागीरथ यादव मूलतः मंदसौर जिले के रहने वाले बताए जाते हैं जो कि शिक्षक होकर बामनिया क्षेत्र में ही अपनी नौकरी पूरी की व यही मूलतः बस गए। भागीरथ यादव ग्राम में शिकायती, विवादित व फर्जी कार्य करने में अव्वल माने जाते हैं।

### अजजा वर्ग का फर्जी आधार कार्ड बनाकर भागीरथ ने प्रशासन के पुरे सिस्टम में लगाया सेंध

लाला व परिवार ने अधिकारियो के सामने शिकायतकर्ता पर किया हमला।

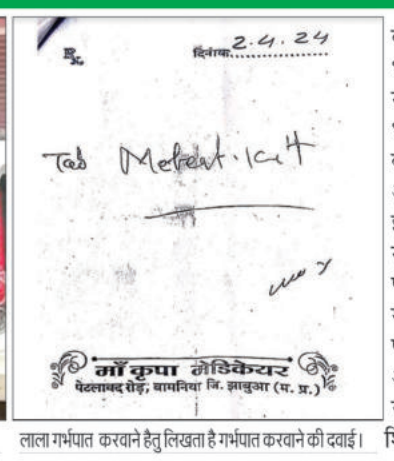

लाला गर्भपात करवाने हेतु लिखता है गर्भपात करवाने की दवाई।

भागीरथ ने अपनी पत्नी गौराबाई यादव जो की जनजाति वर्ग की होकर उनका मायका जावरा का बताया जाता है। लेकिन पति भागीरथ यादव ने अपनी पत्नी को अनुसूचित जनजाती वर्ग का साबित करने हेतु फर्जी दस्तावेजों के साथ एक आधार कार्ड बनाया। जिसमें गौराबाई भाभर केयर आफ में पिता या पति के स्थान पर कालू भाभर नारेला रोड बामनिया दर्शाया हुआ है। इतना ही नहीं उक्त फर्जी आधार कार्ड बनाने के साथ अनुसूचित वर्ग के नाम से गलवाखोरी (रामपुरिया) में सर्वे क्रमांक 59 व 200 क्रमांक की भूमि खरीद कर गौराबाई ने अपने नाम से कर ली है। भागीरथ यादव का उक्त कृत्य ही पूरे सिस्टम को सेंध लगाने वाला कृत्य है और यह बहुत बड़ा अपराध भी है।

उक्त अपराध में वह सारे साझेदार माने जा सकते हैं जिन्होंने फर्जी आधार कार्ड के दस्तावेज दिए, आधार कार्ड बनाने वाला व अनुसूचित वर्ग की भूमि की रजिस्ट्री व नामंत्रण करने वाले अधिकारी भी अपराध की श्रेणी में आते हैं।

### पिता के कर्मों का तंज झेल रहा बेटा

लाला के क्लिनिक पर कार्यवाही हेतु पहुंची थी जांच टीम।

भागीरथ ने पत्नी के नाम से बनाया अजजा वर्ग का फर्जी आधार कार्ड।

उक्त मामले में प्रशासन क्या कार्रवाई करता है यह देखना दिलचस्प रहेगा। लेकिन फिलहाल में लाला अपने पिता के किए कर्मों का तंज झेल रहा है। भागीरथ यादव शिकायती व्यक्ति भी है और अपने शिकायती पृष्ठभूमि के चलते झमक पाटीदार निवासी बामनिया के संबंध में भी शिकायत करना बताया जा रहा है। जिसमें भागीरथ पाटीदार ने एक स्वास्थ्य विभाग का एक भूखंड था उसे अपने नाम करवाने की शिकायत हुई थी। अपनी शिकायत के बाद झमक पाटीदार भी पीछे नहीं रहा और यह कहा कि, बेटा फर्जी क्लीनिक चला कर गर्भपात तक करवाता है। वहीं फर्जी आधार कार्ड बनाकर अपने नाम आदिवासी की जमीन करवाता है जिसकी शिकायत करना उचित है। झमक पाटीदार ने लाला के क्लीनिक पर उपचार हेतु आने वाली उन महिलाओं को नजर में रखने का प्रयास किया जो महिलाएं कुंवारी या शादीशुदा गर्भपात कराने हेतु लाला के क्लीनिक पर आती है। झमक पाटीदार अपनी मुहिम में सफल हुआ और गर्भपात करने एवं रक्तस्राव को रोकने वाली दवाओ की स्लिप जो की लाला ने लिखी है उसके हाथ लगी। उक्त स्लीपो के आधार पर झमक पाटीदार ने संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों को शिकायत की साथ ही सीएम हेल्पलाइन में भी शिकायत की कि, भुवनेश्वर उर्फ लाला अपने क्लीनिक पर खुलेआम गर्भपात करवाता है और प्रूफ के रूप में लाला के हाथ से लिखी मिफ्टी किट की वह स्लिप जो किट गर्भपात में उपयोग की जाती है अन्य स्लिपो के साथ प्रस्तुत की है।

### जांच करने पहुंची टीम के सामने शिकायतकर्ता को पीटा

बुधवार 15 मई को पेटलावद तहसीलदार हुकुम सिंह निगवाल, बीएमओ सूरज कटारा के साथ अन्य स्वास्थ्य अधिकारी व पुलिस कार्रवाई हेतु भुवनेश्वर उर्फ लाला यादव के क्लीनिक पर पहुंचे। अधिकारी ने मौके पर फोन कर शिकायतकर्ता झमक पाटीदार को भी बुलाया। अधिकारी के बुलाने पर पहुंचा शिकायतकर्ता भी अधिकारियों की कार्रवाई के समक्ष था। जो लाला व परिवार के सदस्यों को रास नहीं आया और गुस्से में आग बबूला होकर परिवार की महिलाएं एवं लाला ने गालियां देने के साथ शिकायतकर्ता के साथ हाथापाई करने को उतारू हो गए। उक्त कारनामा उपस्थित सभी अधिकारियों के सामने हुआ।

लाला के क्लीनिक पर कार्रवाई कर सील कर दिया लेकिन शिकायतकर्ता पर लाला एवं परिवार द्वारा मारपीट करने का वाक्या सामने आने पर ग्राम में यही चर्चा चल रही है कि, अधिकारी मुख्य रूप से गर्भपात करवाने वाले मामले से भटकाने का प्रयास कर रहे हैं। मौके पर अधिकारी द्वारा शिकायतकर्ता को बुलवाना और लाला एवं परिवार द्वारा उस पर हमला किया जाना झमक पाटीदार की नहीं बल्कि प्रशासन की किरकिरी है। जिनकी उपस्थिति में यह सब कुछ हुआ। वही लाला एवं परिवार को शिकायतकर्ता पर हमला करने के मामले में कार्रवाई करना थी लेकिन उल्टे शिकायतकर्ता को बुलवाकर उसे पिटवाकर बाद में शिकायतकर्ता को ही थाने ले गए और सीएम हेल्पलाइन से शिकायत वापस लेने हेतु पुलिस से दबाव बनवाया यह प्रशासनिक व्यवस्था कहां तक नीति संगत...?

शिकायतकर्ता का आरोप है कि, बामनिया में पिछले दिनों जो भी भ्रूण हत्या के बाद नवजात बच्चे मिले है, उनका भी गर्भपात इसी लाला द्वारा ही किया गया है। भ्रूण हत्या पाप है और प्रशासन निष्पक्ष कार्रवाई करती है तो क्षेत्र में गर्भपात व भ्रूण हत्या के मामले रुक जाएंगे।

# विक्रांत का विधानसभा चुनाव जीतने और अपने पिता के लिए लोकसभा चुनाव लड़ने का पेटर्न एक जैसा

## निजी आरोप-प्रत्यारोपों के जरिए ही लोकसभा में भी नैया पार लगाने की कोशिश

## अगर भाजपा हारी तो क्या फिर एक बार भीतराघात ही होगा कारण

माही की गूंज, झाबुआ।

लोकसभा 2024 का चुनाव एक बड़े अखाड़े के रूप में सामने आया है। इस अखाड़े में खूब एक-दूसरे के कपड़े उतारे गए। इस बार के लोकसभा चुनाव पूरे देश में 7 चरणों में होना है। जिसके 5 चरण पूर्ण हो चुके है। रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर 13 मई को चौथे चरण में मतदान संपन्न हो चुका है। चुनावी नतीजे 4 जून को आने है। जिसके बाद यह तय हो जाएगा कि देश के साथ-साथ रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट का भविष्य क्या होगा?

वैसे अगर रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट को देखा जाए तो यहां सीधे तौर पर भाजपा-कांग्रेस में मुकाबला हुआ है। इस मुकाबले में किसने किसको कितना नुकसान किया है, यह कोई नहीं जानता। इस संसदीय सीट पर इस बार जमीनी मुद्दों को छोड़ आपसी व निजी टिका-टिप्पणी पर ही यह चुनाव केंद्रीत रहा है और माना भी यही जा रहा है कि, इन्ही निजी आरोप-प्रत्यारोपों पर चुनावी परिणाम आकर टिक गया है।

इस सीट पर कांग्रेस की अगर बात की जाए तो यहां कांग्रेस प्रत्याशी कांतिलाल भूरिया मैदान में तो थे लेकिन चुनाव की कमान असल रूप में उनके बेटे विक्रांत भूरिया ने थाम रखी थी। विक्रांत किसी परिचय के मोहताज नही है। वे झाबुआ विधानसभा से विधायक है, तो कांग्रेस संगठन में भी वे प्रदेश स्तरीय पदों पर रहे है। मगर लोकसभा चुनावों में विक्रांत अपने पिता के लिए खुलकर पहली बार मैदान में देखें गए है। हालांकि विधानसभा 2023 के चुनावों में विक्रांत ने झाबुआ विधानसभा से जीत दर्ज कर अपना कब्जा जमाया था। तत्समय विक्रांत अपने प्रतिद्वंदियों पर निजी आरोपों को लेकर हमलावर हुए थे। परिणाम जीत के रूप में सामने आया था।

इस बार चूंकि लोकसभा का चुनाव था और कांतिलाल भूरिया कांग्रेस से मैदान में थे, तो विक्रांत ने अपने बेटे होने का धर्म निभाते हुए प्रदेश युवक कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तिफा दिया और पिता को जिताने के लिए जी-जान लगाकर पूरे संसदीय क्षेत्र में संसदीय सीट कब्जाने के लिए डटे हुए दिखाई दिए। विक्रांत का मैदान में होना प्रतिद्वंदियों और भाजपा के लिए नुकसान ही साबित होता दिखाई पड़ रहा है। यहां एक बात और गौर करने वाली है कि, जिस तरह से विक्रांत ने विधानसभा चुनावों में भाजपा प्रत्याशी पर निजी आरोप-प्रत्यारोप करते हुए हमले किए थे, उसी पेर्टन में इस बार वे अपने पिता

के लोकसभा चुनाव में भी जुबानी हमला करते दिखाई दिए। विक्रांत के यह हमले इतने तीखे और तेज थे कि, भाजपा व भाजपा प्रत्याशी अब सक्ते में दिखाई दे रहे है। यहां विक्रांत का चुनावी पेटर्न दोनों ही चुनावों में विधानसभा और लोकसभा में एक जैसा ही दिखाई दिया है। हालांकि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि, वे अपने विधानसभा चुनाव की तरह अपने पिता के लिए लोकसभा में भी सफल हो जाएंगे। यह जरूर कहा जा सकता है कि, विक्रांत निजी आरोप-प्रत्यारोपों के जरिए अपने पिता की लोकसभा चुनावों में नैया पार कराने की भरशक कोशिश में दिखाई दिए है।

जिस तरह विक्रांत ने विधानसभा चुनावों में भाजपा प्रत्याशी भानू भूरिया पर आरोप लगाते हुए निजी हमले किए थे, वे भी बहुत गंभीर ही थे। जिसका परिणाम भाजपा व भानू को हार के रूप में भुगतना पड़ा था। अब वर्तमान में लोकसभा चुनावों में भी विक्रांत ने अपना यही पेटर्न जारी रखा और भाजपा व भाजपा प्रत्याशी अनिता चौहान उनके पति वर्तमान प्रदेश सरकार के वनमंत्री नागरसिंह चौहान पर भी लगातार आरोप लगाते हुए निजी हमले किए। हालांकि विक्रांत के आरोपों को मिथक तो नही किया जा सकता। क्योंकि सोशल मीडिया पर घूमती नागरसिंह चौहान की एक वीडियो ने विक्रांत के सारे आरोपों को सच साबित कर दिया है। विक्रांत के इन निजी हमलों से भाजपा व भाजपा प्रत्याशी अनिता नागरसिंह चौहान पूरी तरह से बौखलाए हुए नजर आए। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है और इसी तरह नागरसिंह ने भी प्रतिक्रिया देते हुए विक्रांत को भुगतने की चेतावनी दे डाली।

कहीं न कहीं विक्रांत के आरोपों और नागरसिंह की प्रतिक्रिया इस चुनाव को काफी हद तक साफ करती दिखाई दे रही है। राजनीति विशेषज्ञों की अगर माने तो भाजपा को अगर हार हुई तो यह भाजपाईयों के कर्मों की ही बदौलत होगी। हालांकि नागरसिंह चौहान ने इन आरोपों से बचने व उन्हे मिथक बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। विक्रांत के लगातार निजी हमलों के बावजूद नागरसिंह चौहान को भाजपा के सशक्त संगठन पर भरोसा था। बूथ मैनेजमेंट पर भरोसा था, लेकिन नागरसिंह चौहान कहां तक सफल हुए यह कह पाना मुश्किल है। इसके अलावा एक बड़ा फैक्टर इस संसदीय सीट पर भील और भीलाला का देखने को मिला जो चुनाव परिणामों को प्रभावित करेगा।

जैसा कि हमेशा चुनावों में देखने को मिलता रहा है कि, किसी भी प्रत्याशी की हार का सबसे बड़ा कारण भीतरघात होता है। पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा प्रत्याशी रहे भानू भूरिया ने चुनावी हार के बाद इस तरह के आरोप लगाए थे और संगठन में इसकी शिकायत भी की थी। अभी विधानसभा चुनावों को गुजरे महज 6 माह का समय गुजरा है। इससे यह बात तो कहीं न कहीं खटकती नजर आ रही है कि, इस लोकसभा चुनाव में भीतरघात ना हुआ हो। संसदीय सीट के झाबुआ जिले की बात करें तो यहां भाजपा हमेशा से ही गुटबाजी का शिकार रही है। अंदर खाने की खबर रखने वाले बताते है कि, इस बार भी लोकसभा चुनावों में भाजपा में भीतरघात हुआ है जो समय के साथ सामने आएगा। अगर यह बात सच होती है तो भाजपा इस संसदीय सीट पर खुद कांग्रेस को एक बड़ी जीत दे देगी।

यह सब जानते है कि इस संसदीय सीट पर गुमानसिंह डामोर का टिकट काट कर अनिता नागरसिंह चौहान को दिया गया है। इसका सीधा सा मतलब है कि, गुमानसिंह खुश तो नहीं हुए होंगे। इस लोकसभा चुनाव के दौरान उनका मैदान से गायब रहना भी चर्चाओं में रहा है, लेकिन इस पर वे मीडिया को अपनी सफाई दे चुके है। हांलाकि इस बात से भी इंकार तो नही किया जा सकता कि, संसदीय सीट पर डामोर का टिकट कटने के बाद उनके समर्थक भी मैदान में दिखाई नही दिए। यानि गुमानसिंह डामोर के लोकसभा चुनाव प्रचार से अलग रहने की, हो सकता है कोई मजबूरी रही होगी। लेकिन बड़ी संख्या में उनके समर्थक बिना किसी मजबूरी के ही मैदान से गायब दिखाई दिए। वजह जो भी रही हो लेकिन ऐसे हालात इस पूरे लोकसभा चुनाव में देखने को मिले है।

इसके अलावा भी यह माना जा रहा है कि जिले में भाजपा भीतरघात का शिकार हुई है। दबी जुबान से बताने वाले बताते है कि, जिला संगठन के ही लोगों ने भीतरघात किया है। भीतर घात भी ऐसा कि, खुद भाजपाईयों ने ही मतदाताओं को कांग्रेस के पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित किया है। जिले में भाजपाई संगठन की अगर यह स्थिति जो बताई जा रही है, सही है तो फिर इस रतलाम-झाबुआ लोकसभा में तो भाजपा के लिए एक ही बात ''गई भैंस पानी में''।

# एक विभाग ने बनाई सड़क तो दूसरे विभाग ने की खुदाई

## ठेकेदार ने बिना परमिशन के रोड के समीप शोल्डर खोदकर बिछा दी पाइपलाइन

माही की गूंज, खवासा।

इन दिनों थांदला जनपद क्षेत्र में जल जीवन जल मिशन के तहत कई जगह टंकियां का निर्माण किया जा रहा है। निर्माण कार्य पीएचई विभाग के मार्फत से ठेकेदार द्वारा किया जा रहा है। अधिकांश निर्माण करने वाली कंपनियां गुजरात की है। जहां भी कार्य किया जा रहा है वहां निम्न व घटिया स्तर का कार्य करने के बाद ग्रामीण अंचलों में बने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के रोड की भी खुदाई की जा रही है। जिसमे रोड के समीप बिना परमिशन के शोल्डर की खुदाई करके पाइप बिछाए जा रहे हैं। फिर भी जिम्मेदार पीएचई विभाग के अधिकारी जानकर भी अनजान बनते हुए ठेकेदार को संरक्षण दे रहे हैं। कई जगह जल जीवन जल मिशन में किए जा रहे कार्यों की अनियमित्ता भी अखबार के माध्यम से उजागर हो रही है लेकिन फिर भी ठेकेदार को आज दिन तक ब्लैक लिस्ट नहीं किया गया न ही उन पर कोई वैधानिक कार्रवाई की गई। जहां भी देखो वहां ढील मूल रवैया से कार्य हो रहा है लेकिन कोई भी जिम्मेदार अधिकारी देखने पर आमदा नहीं है।

ग्राम पंचायत सागवा में जल जीवन जल मिशन के तहत बनाई गई टंकी का निर्माण कार्य 6 माह से बंद था। जिसकी शिकायत होने के बाद ठेकेदार ने फिर कार्य शुरू किया। बताते हैं कि, कार्य करने वाली फर्म गुजरात की देसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बड़ी लापरवाही कर रही है। वही थांदला सब डिवीजन के पीएचई विभाग के सब इंजीनियर गौरी शंकर चौधरी को इस और देखने तक की फुर्सत नहीं है, या यूं कहें कि ठेकेदार से तालमेल अच्छे हैं इसलिए ठेकेदार पर कार्रवाई भी नहीं कर रहे हैं।

बता दे कि, काफी समय बाद कार्य शुरू करने के बाद खेरियापाड़ा फलिया में पाइपलाइन बिछाने का कार्य ठेकेदार के माध्यम से किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना खैरियापाड़ा से खवासा मार्ग का कुछ माह पहले ही नए सिरे से निर्माण किया गया था। जिस रोड के समीप ठेकेदार ने बिना परमिशन के शोल्डर खोद कर पाइप बिछाने का कार्य पीएचई विभाग के अधिकारियों के सानिध्य में शुरू कर दिया। जानकारी के अनुसार रोड के शोल्डर को खोद भी नहीं सकते हैं। तो साथ ही शासन द्वारा इसकी परमिशन भी नहीं दी जाती है। लेकिन कई जगह ठेकेदार इस तरह से रोड की खुदाई धड़ल्ले से कर रहा है। जैसे ही शोल्डर के समीप पाइप बिछाने का कार्य किया जा रहा था तो किसी ने उक्त शिकायत प्रधानमंत्री ग्राम सड़क के सब इंजीनियर को कर दी। जिसमें सब इंजीनियर शिल्पा सोलंकी मौके पर पहुंची व फोटो-वीडियो बनाई। साथ ही जेसीबी से कार्य किया जा रहा था उस जेसीबी को बिना परमिशन के कार्य करने पर चौकी पर खड़ी करवाने की हिदायत भी जेसीबी चालक को दी गई, उसके बाद जेसीबी चालक ने सरपंच को फोन लगाया। ग्राम सागवा में पाइपलाइन बिछाने में जो कार्य किया जा रहा है उसमें सरपंच के किसी रिश्तेदार की ही जेसीबी लगा रखी है। सरपंच को जैसे ही मालूम पड़ा तो सरपंच ने तत्काल जेसीबी को वहां से हटाया और अधिकारियों से हाथ जोड़ निवेदन किया कि, आगे से हम खुदाई नहीं करेंगे। उसके बाद प्रधानमंत्री ग्राम सड़क के अधिकारियों ने एक शिकायत आवेदन बनाकर स्थानीय खवासा चौकी पर दिया और निकल गए।

मामले में देसाई कंस्ट्रक्शन कम्पनी के इंजीनियर अफताफ आलम से जानकारी ली तो उनका कहना था कि, हम तो कार्य कर रहे हैं जल्दी ही कार्य करके ग्राम पंचायत को हैंडओवर करना है। हमारे द्वारा कोई परमिशन नहीं ली गई है। मेरे पास अतिरिक्त कार्य भी रहता है इसलिए मैं वहां नहीं था। वहा अन्य कर्मचारियों ने इस तरह से रोड की खुदाई की है लेकिन हम जल्द ही इस रोड को समय पर सही करके देंगे।

साथ ही मामले में पीएचई विभाग के अधिकारियों से संपर्क करने की कोशिश की गई लेकिन किसी से संपर्क नहीं हो पाया।

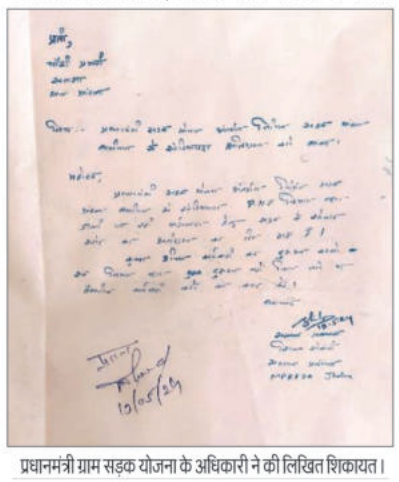
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अधिकारी ने की लिखित शिकायत।

### समाचार प्रकाशित होने के बाद ठेकेदार ने तत्काल शुरू किया कार्य

बता दे कि, माही की गूंज के वेब न्यूज़ पोर्टल पर 29 अप्रेल 2024 को ÷भीषण गर्मी में पानी के लिए परेशान हो रहे ग्रामीण जिम्मेदार, पीएचई विभाग के अधिकारी आंखें मूंद कर बैठे÷, ÷मामला थांदला जनपद की ग्राम पंचायत सागवा का जल जीवन जल मिशन में क्या था। कार्य 6 माह से बंद पड़ा कार्य ग्रामीण परेशान÷ शीर्षक के साथ समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया गया था। उसके बाद पीएचई विभाग के अधिकारियों ने ठेकेदार को तत्काल कार्य शुरू करने के लिए निर्देशित किया। जिसमें गुजरात की कंपनी देसाई कंस्ट्रक्शन सूरत द्वारा कार्य शुरू किया गया, जिसमें कुए का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। साथ ही जहां भी कार्य बचा है वहां पाइपलाइन की खुदाई कर के बिछाई जा रही है। जैसे ही कार्य शुरू किया गया वैसे ही प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में बनी सड़कों को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। जिम्मेदार अधिकारियों को ठेकेदार के ऊपर कार्रवाई करनी चाहिए कि, बिना परमिशन के किस तरह से कार्य शुरू किया जा रहा है। किसके माध्यम से रोड की खुदाई की जा रही है। आदि जानकारी लेने के बाद इसके ऊपर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। क्योंकि एक विभाग सड़क बनता है तो दूसरा विभाग उसी को खोद रहा है जिससे आम जनता के पैसों का दुरुपयोग हो रहा है।

मामले में खवासा चौकी प्रभारी हीरालाल मालीवाड़ से चर्चा की तो उन्होंने बताया कि, आवेदन आया है हमने संबंधित अधिकारियों को अवगत करा दिया है की रोड को सुधार दिया जाए। रही बात कार्रवाई की तो अभी जाँच जारी है। जैसे ही वाहन की जानकारी मिलेगी तो उसके ऊपर भी कार्रवाई की जाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422